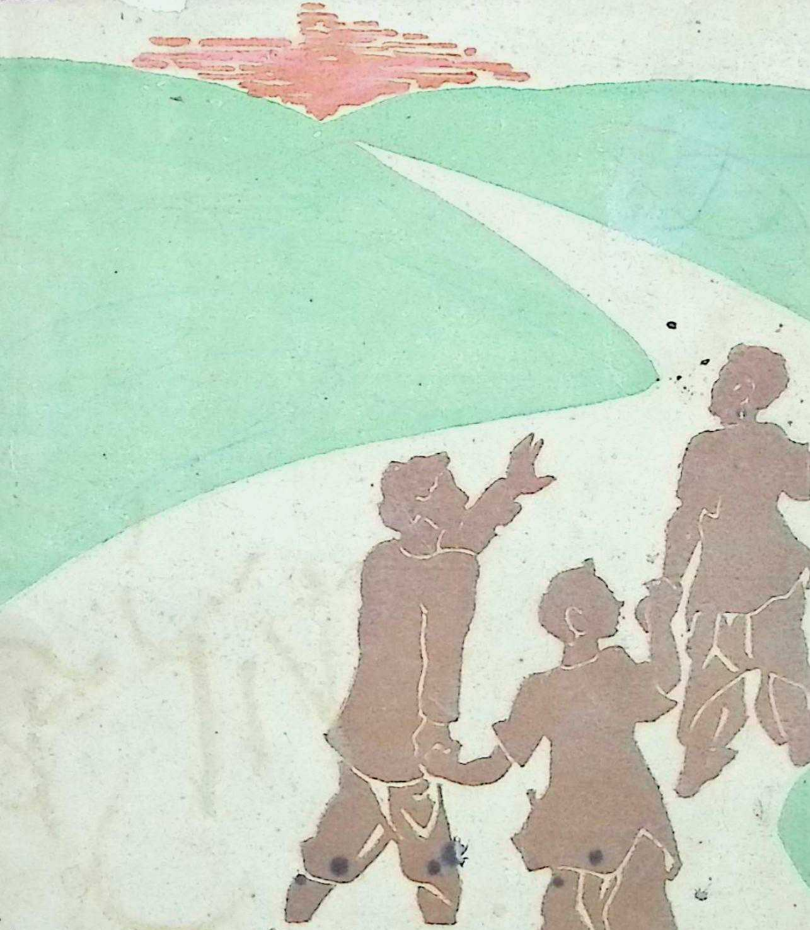


ीनों

अयोध्याप्रसाद झा

श्रद्धेय डा० डी० आर० रेग्मी को
सादर

सूर्यप्रसाद उपाध्याय

३१/८/६०

वे तीनों

[किशोरोपयोगी मौलिक उपन्यास]

बाल-शिक्षा-समिति, पटना-४

प्रथम संस्करण—जून, १९५१

पुनर्मुद्रण—जनवरी, १९५३

पुनर्मुद्रण—जनवरी, १९५५

पुनर्मुद्रण—फरवरी, १९५९

पुनर्मुद्रण—जुलाई, १९५९

पुनर्मुद्रण—दिसम्बर, १९५९

मूल्य—१ रुपया ३७ नये पैसे

चित्रकार—श्री प्रभास सेन

मुद्रक—हिन्दुस्तानी प्रेस, पटना-४

वे तीनों

अयोध्याप्रसाद झा

नन्दू, श्यामू और बीरू की दाँतकाटी दोस्ती सारे गाँव के लिए ईर्ष्या की चीज थी—क्या बूढ़े और क्या जवान। बच्चों के लिए वे तीनों एक आकर्षण थे। तीनों के इस गठबन्धन के पीछे कौन-सी चीज थी, यह बताना मुश्किल है। बूढ़े की नजरों में पितृहीन बीरू एक आवारा था। श्यामू की मा न थी। अपने धनी पिता का इकलौता होने के कारण पिता का सब-कुछ उसके ऊपर न्योछावर था। गाँववालों के लिए वह एक बिगड़ा लड़का था। और, नन्दू अपने गरीब मा-बाप के प्राण था। गाँव के लच्छू बाबा उसे देखकर घृणा की हँसी हँस देते थे और अपने बूढ़ों की मंडली में निर्विकार होकर कहा करते थे—यह नन्दुआ सारे गाँव के लड़कों को बिगाड़कर रख देगा। घर में भूँजी-भाँग नहीं और चला है पुस्तकालय कायम करने। दो अक्षर पढ़ क्या लिया है अपनेको कालिदास समझने लगा है! श्यामू इसके फेर में पड़कर अपने बाप का सारा

कमाया मिट्टी में मिला देगा ! उसके बाप को क्या सूझा है कि उसके पीछे अपना सब धन पानी की तरह बहा रहा है !

श्यामू का खेल में कोई सानी नहीं रखता था—जब कबड्डी खेलने लगता तो अपने विपक्षी-दल के आधे से ज्यादा लोगों को एक बार में ही मात कर रख देता। गुल्ली-डंडा तो उसका खास प्रिय खेल था। यों नन्दू की खेल में रुचि नहीं थी, पर श्यामू उसे घसीट लाता और उसे खेलना ही पड़ता। और, लापरवाह बीरू के लिए जैसा खेल था, वैसी ही पढ़ाई-लिखाई। खेलता है तो खेलता है, और पढ़ता है तो पढ़ता है। न उसे अपने कपड़े की परवाह थी और न अपनी पुस्तक की। जो चीज जहाँ पड़ी है, वहाँ पड़ी है। उसको सजाना नन्दू और श्यामू का काम था। पर, उसकी बुद्धि बड़ी तीव्र थी। उसकी बात नन्दू और श्यामू के लिए प्रमाण थी। वह जो कहता किसी न किसी तरह दोनों पूरा करने के लिए अपना जी-जान लगा देते और उसे पूरा करके ही छोड़ते।

❋

उस दिन रविवार था। तीनों की गोष्ठी जमी थी श्यामू के घर। बीरू ने कहा—देखो नन्दू, तुम पुस्तकालय की बात बहुत दिनों से कहते आ रहे हो ; उसका नामकरण हो जाना चाहिये। क्यों श्यामू ?

श्यामू ना कब कह सकता था। कहा—पर, पुस्तकालय के साथ मेरे खेल की भी व्यवस्था होनी चाहिये। मेरा तो स्वार्थ प्रधान है ही; पर तुम्हारे पुस्तकालय में कोई झाँकने भी न आयेगा, अगर उसके साथ कुछ खेल का इन्तजाम न रखोगे। मेरा तो यही विचार है, तब तुम दोनों जैसा कहो।

हाँ, भला कहो, श्यामू बाबू के लिए खेल का इन्तजाम तो चाहिये ही।—नन्दू ने कहा।

खेल का नाम लेते ही तुम्हारी नानी मर जाती है, तो जाने दो।—श्यामू जरा रूठकर बोला।

नहीं-नहीं दोनों होंगे—पढ़ना-लिखना भी चलेगा और खेल भी।—बीरू मध्यस्थता करते हुए बोला।

बस ठीक हो गया और उन तीनों की संस्था का नामकरण हो गया—बाल-मंडली। तीनों ने बैठकर मंडली के उद्देश्य भी ठीक कर लिये—लड़कों की पढ़ने में रुचि पैदा करना और खेल द्वारा उनका मनोरंजन करना तथा गाँवों की सफाई में हाथ बँटाना।

दूसरे ही दिन बाल-मंडली का साइनबोर्ड भी श्यामू के बगीचेवाले घर में लटक गया। रात-दिन वहाँ लड़के जुटने लगे। सारे खेल-कूद भूलकर लड़के अब वहाँ ही दौड़ने लगे। किताबें आयीं, लड़कों के लायक पत्र-पत्रिकाएँ आने लगीं।

कबड्डी और गुल्ली-डंडे के खेल भी जमने लगे। लड़के सभी प्रसन्न थे ; पर उनके मा-बाप आग-बबूला होने लगे।

❋

ये तीनों गाँव को चौपट करके रख देंगे।—बूढ़ों की गोष्ठी ने एक स्वर से कहा। वे सोचने लगे—कैसे यह मंडली टूटे। अपने लड़कों को रोकते-थामते। पर, वे नजर बचाकर भी वहाँ इकट्ठे हो जाते और उनका आनन्द-किल्लोल चलता।

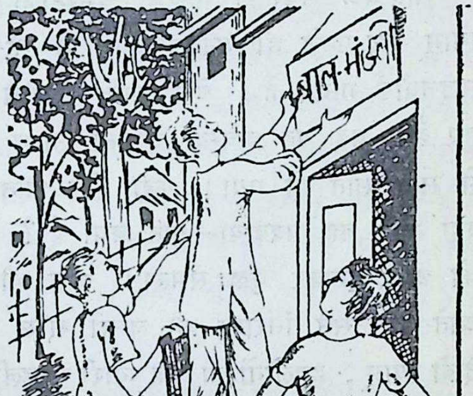
नवल चाचा ने लच्छू बाबू से कहा—देखते हैं, इन तीनों छोकड़ों ने कैसा ऊधम मचा रखा है? धरम अब बचने न पायेगा। गाँव की प्रतिष्ठा मिट्टी में मिल जायगी। सारे गाँव के लड़कों को तो बिगाड़ ही दिया है, उन डोम-चमारों को भी ये सिर चढ़ा रहे हैं। चमार के लड़के भी अब वहाँ आने-जाने लगे हैं। सुनते हैं, कल एतवार को मिलकर ये लोग चमरटोली जाकर वहाँ की सफाई अपनेसे करेंगे।

लच्छू बाबा यह सुनकर आपे से बाहर हो गये—इन सालों ने तो नाकों-दम कर दिया है। नन्दुआ के बाप को बुलाकर आज हम दुतकारते हैं। पर राघो को हम क्या कहें, उसकी बुद्धि मारी गयी है! वह अपने लड़के को न सँभालेगा तो अपने किये पर पछतायेगा।.........क्या

नब्बो, इन लोगों की मंडली-फंडली किसी तरह तोड़ी नहीं जा सकती है ?

हाँ, चाचा, ऐसा हो जाय तो क्या कहना ! फिर तो पुराना दिमाग !--नवल चाचा ने बाबा की ठकुरसुहाती करते हुए कहा।

तो देखो रात में उन लोगों का जो साइनबोर्ड है उसे ही खुलवा-कर कहीं फिकवा दिया जाय। सालों की सब सिट्टी-पिट्टी भूल जायगी। सीरिया को बुलाकर चुपचाप यह कह दो। आज



....बाल-मंडली का साइनबोर्ड भी श्यामू के बगीचेवाले घर में लटक गया।—(पृष्ठ ५)

ही रात को यह काम हो जाय। बड़े चले हैं गाँधी के भक्त बनने ! झाड़ू देंगे, तो पाखाना साफ करेंगे !

सात बजे सवेरे ही मण्डली चमरटोली जाने वाली थी। श्यामू कुछ पहले ही मण्डली-भवन में पहुँचा। देखता है—साइनबोर्ड गायब है। बेंच आदि बगीचे में बाहर फेंके हुए हैं। वह यह अवस्था देखकर स्तब्ध रह गया। सात से सवा सात हो गया। कहीं कोई आता दिखाई न दे रहा था। वह घबड़ाया—बात क्या है ? पर दूर से बीरू को आते देखकर कुछ सँभला। बीरू भी बड़ा उदास था। आते ही उसने निराशा की लम्बी साँस लेते हुए कहा—देखो श्यामू, हमलोगों की यह प्यारी मण्डली बूढ़ों की आँखों का काँटा हो रही है। कल शाम को ही सबोंके घर हिदायत पहुँच गयी थी कि कोई अपने लड़के को कल मण्डली में सबेरे न जाने दे। लच्छू बाबा का यह फौजी आदेश सीरी महाराज घर-घर पहुँचा आये हैं। पर निराश होने की बात नहीं; हमारी टोली तो आज अपने निश्चय को पूरा करके ही छोड़ेगी। हम इन्तजाम कर आये हैं, ताकि कुछ लड़के अवश्य जुट जायँ। उमा, नरेश, देवू और महेश तो जरूर ही पहुँचेंगे। वे आते ही होंगे। नन्दू न आ सकेगा। उसके बाबूजी घबड़ाये हैं। मैंने उसे आने से मना कर दिया है।

दोनों बातें ही कर रहे थे कि उमा और महेश आ

धमके। सबोंमें साहस बँध गया। आगे-आगे श्यामू झाड़ू लिये, नायक के रूप में चल रहा था। पीछे तीनों थे। गली की मोड़ पर देबू और नरेश भी आ मिले। अब क्या था! यद्यपि कलवाला जोश न था; पर वे निराश न थे। रवीन्द्र सात बजे से ही अपने कुछ साथियों के साथ इन लोगों की अगवानी के लिए खड़ा था। सारी चमरटोली इन लोगों को देखकर अवाक् रह गयी। अधिकांश लोग सहमे हुए थे कि आज क्या होगा! इन लड़कों के चलते शायद बाबाजी लोग चमारों पर कुछ आफत न ढाहें!

कुछ बूढ़े चमारों ने आकर उन लोगों की आरजू-मिन्नत की—बाबू, क्यों आपलोग ऐसा कर रहे हैं? आपलोग ब्राह्मण-राजपूत के लड़के हैं, ऐसा काम न करें। हमलोगों की जिन्दगी इसी तरह बीतेगी—हमारे कितने पुरखे ऐसी ही गन्दी जगहों में रहकर गुजर गये।

औरतें अपने लड़कों को मना कर रही थीं—उन बाबुओं को मत छुओ।

पर वे लोग तो ब्राह्मण, ब्राह्मण नहीं; चमार, चमार नहीं थे—सभी भारत-माता की संतान! उन लोगों में छूने, न छूने का सवाल नहीं उठता था।

दस बजते-बजते चमरटोली के कूड़े-कतवार बुहारकर लड़के

गाँव के बाहर गड्ढों में फेंक आये। इतना कर लेने के बाद वे कुछ स्वस्थ और प्रसन्न मालूम होते थे।

शाम को मंडली की बैठक हुई। लड़के काफी संख्या में जुटे। रवि भी अपने कुछ साथियों के साथ आ जुटा था। बीरू ने अधिकांश लड़कों के सफाई के प्रोग्राम में शामिल न होने के कारण खेद प्रकट करते हुए कहा—

भाइयो, हम जानते हैं कि आपलोगों में पूरा उत्साह है। आपलोग मंडली के उद्देश्यों को निभाने में तत्पर रहेंगे और हैं। आपलोगों की लाचारी भी हम जानते हैं। पर हमें इन कठिनाइयों—इन काँटों—की परवाह न करते हुए, आगे बढ़ना पड़ेगा। हमारे माता-पिता हैं। उनकी आज्ञा शिरोधार्य है। पर उन्हें कहिये—उनकी आरजू-मिन्नत कीजिये। कहें कि हमें अपनी सुराह पर वे चलने दें, सुन्दर उद्देश्य की सफलता के लिए वे हमारी मदद करें।

तालियों की गड़गड़ाहट के बीच बीरू बैठ गया। रवि, जो आज की बैठक का प्रधान (सभापति) था, का आदेश पाकर नन्दू, जो सफाई के प्रोग्राम में न शामिल हो सकने के कारण बड़ा लज्जित था, धीमे स्वर में कहने लगा—

भाइयो, अपनी इस कायरता के लिए आपलोगों से क्षमा चाहता हूँ। मैं अपनी मा और बाबूजी को रोते छोड़ आज सफाई के प्रोग्राम में शामिल न हो सका। हमारे

माता-पिता की अवस्था……कहते-कहते उसकी आँखों से अविरल आँसू गिरने लगा। वह अपनेको सँभाल न सका। उसे मालूम हुआ जैसे उसकी आँखों के सामने अन्धकार छा गया। उसे गिरते-गिरते बीरू ने सँभाला। पानी से उसका सिर धोया गया। श्यामू घबड़ा उठा—नन्दू, नन्दू……।

कुर्ते से हवा करते हुए बीरू ने कहा—घबड़ाओ नहीं श्यामू, हवा आने दो। एक-आध पंखे का इन्तजाम करो।

थोड़ी देर के लिए सभी लड़कों के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। दस-पन्द्रह मिनट के बाद नन्दू कुछ स्वस्थ होकर उठ बैठा और बोला—बिलकुल ठीक हूँ। आपलोग कार्यवाही बन्द न करें। पर, सभापति से आग्रह करके श्यामू ने आज की बैठक स्थगित करा दी।

नियम के अनुसार आज पन्द्रहवें दिन पर कबड्डी का मैच होने वाला है। पहले से निश्चय था कि हरिजन-टोली के लड़कों का दल एक ओर रहेगा और बाकी लड़के एक ओर। सभी लड़कों में उत्साह और जोश उमड़ा पड़ रहा था। सभी अपनी-अपनी बहादुरी दिखलाने की बातें सोच रहे थे। तीन बजे से ही लड़के जुटने लगे थे। साढ़े तीन बजने को है।

पर, नन्दू दिखाई नहीं पड़ रहा है। उसकी अनुपस्थिति से श्यामू प्रायः घबड़ा जाया करता था। आज भी वह कुछ बेचैन-सा दीख पड़ता था। उसकी खोज के लिए एक लड़के को वह भेज ही रहा था कि उसका 'प्यारा' दूर से आता दिखाई पड़ा। उसको देखते ही श्यामू का चेहरा खिल उठा। जिस श्यामू के चेहरे पर अभी कुछ क्षण पहले मुर्दनी छाई हुई थी, वही एक लहलहाता पौधा-सा दिखाई पड़ने लगा। नन्दू विचार-मग्न मैदान की ओर आ रहा था।

क्यों, पण्डितजी, क्या बात है? इतनी देर क्यों लगायी? देश की कौन-सी समस्या हल करने में इतने लीन हैं?—श्यामू ने हँसते हुए पूछा।

नहीं, यों ही!

अरे बताओ भी तो सही। और, देर करने के लिए तो आपको सजा भुगतनी ही पड़ेगी।

अरे हाँ, मुझे तो देर हो ही गयी। पर अब खेल शुरू हो जाना चाहिये, नहीं तो हमारे खेल के देवता (श्यामू की ओर इशारा करते हुए) नाराज हो जायेंगे। अच्छा नायकजी, अब सबोंको आज्ञा दीजिये कि दो अलग-अलग दल में हो जायँ।

दोनों दल तो बने ही हुए हैं—हरिजन-टोलीवाले एक ओर और बाकी एक ओर।—श्यामू ने कहा।

नहीं, ऐसा नहीं होगा। मेरी बात मानें तो मैं बताऊँ ?—नन्दू ने कहा।

हाँ, हाँ जरूर कहिये। तभी तो हमलोग कह रहे थे कि पण्डित महोदय आज कुछ नयी बात सोच निकालने में लीन हैं।—बीरू ने व्यंग पर स्नेह भरे शब्दों में कहा।

नन्दू ने बताया—सभी लड़के, कुछ रवि के टोले के लड़के एक दल में और कुछ दूसरे दल में रहेंगे।

बीरू ने हामी भरते हुए सिर हिलाया। उसका निर्णय तो सर्वमान्य था ही।



खेल शुरू हो गया है।—(पृष्ठ १३)

खेल शुरू हो गया। आज नन्दू में अजीब जोश दिखाई पड़ रहा था। श्यामू यह देखकर बड़ा खुश था कि नन्दू की भी अब

खेल में रुचि-सी हुई जान पड़ती है। एक बाजी खतम हो गयी। नन्दू के दल की विजय हुई थी। श्यामू हार में भी आज विजय का उत्साह अनुभव कर रहा था।

बीरू ने नन्दू की पीठ ठोकते हुए कहा—वाह रे मिट्टी के शेर, क्या बहादुरी दिखाई! पर बेचारा नन्दू जीतकर भी हारा-सा दिखाई पड़ रहा था। श्यामू की ओर उसकी आँखें भी न उठती थीं।

दूसरी बाजी शुरू हुई। पर नन्दू में अब वह जोश नहीं दिखाई पड़ रहा था। वह बेहोश-सा अपने विपक्षी-दल के घर 'कबड्डी-कबड्डी' करते जाता और आधा मिनट भी न रुक पाता—एक हारे सैनिक की तरह अपने घर की ओर थका-सा लौट आता। उसकी यह अवस्था देखकर श्यामू निर्जीव-सा दिखाई पड़ता था। वह दूसरी बाजी का सेहरा भी नन्दू के सिर बाँधना चाहता था। पर, नन्दू की उदासीनता से उसके दल के लड़के भी उत्साहहीन हो रहे थे।

'कबड्डी-कबड्डी' करता हुआ एक बारह वर्ष का लड़का श्यामू के घर पहुँचा है। उसमें पूरा जोश है। एक झपेट देकर श्यामू को छूकर ज्योंही भागा कि उसके दल के एक लड़के ने उसे ऐसी लंघी दी कि वह चारों खाने चित्त गिर गया और कराह उठा। यह देख श्यामू उसपर जा झुका—क्यों दिनेश क्या हुआ? पर, यह क्या? वह तो बेहोश पड़ा हुआ था।

श्यामू घबड़ाकर चिल्ला उठा—अरे नन्दू, बीरू, यह तो बेहोश हो गया।

सभी लड़के घेरकर खड़े हो गये। पानी लाकर उसका उपचार किया जाने लगा। वह जब कुछ होश में आया तो कराहने लगा और अपने दाहिने हाथ से अपनी बाँयीं केहुनी टटोलने लगा।

यह देखकर सभी लड़के चिन्तित हो उठे। इसका कारण भी था; क्योंकि दिनेश सीरी महाराज का भगिना था। सभी सोचने लगे—किसीका आज कुशल नहीं, सीरी महाराज को खबर मिलने की देर है। एक-एक कर लड़के खिसकने लगे। बिजली की तरह खबर गाँव में फैल गयी कि कबड्डी खेलने में श्यामू ने दिनेश का हाथ तोड़ दिया। श्यामू, नन्दू और बीरू दिनेश को घर पहुँचाने का इन्तजाम ही कर रहे थे कि देखा, सीरी महाराज आग-बबूला बेतहाश मैदान की ओर दौड़े आ रहे हैं। चारों पहले तो बड़ा घबड़ाये ; पर श्यामू ने अपने को सम्भाला।

श्यामू कुछ कहने ही वाला था कि सीरी महाराज गर्जन कर उठे—तुम सबोंने मिलकर मेरे बच्चे की जान लेने की सोची है। देखना, अगर एक-एक की खबर न लूँ, तो मेरा नाम सीरिया नहीं। ऐसा मजा चखाऊँगा कि छठी का दूध याद हो जायगा। शैतान आवारे"'और क्या-क्या बक गये। फिर

दिनेश पर उबले और उसे गोद करके अपने घर की ओर चले गये।

❊

दूसरे दिन श्यामू और बीरू डरते-डरते सीरी महाराज के घर की ओर चले। उनका घर गाँव के बाहर दक्खिन की ओर वीरान में बसा था। एक छोटी-सी झोपड़ी की तरह: उनका घर दिखाई पड़ रहा था। देखने से पता चलता था कि वह घर पहले बड़ा दालान था। उसकी दीवार को ऊपर से छोटा कर उसपर पुआल और डमोले की छावनी शायद दो साल पहले की गयी है। डमोले और पुआल पानी का धक्का सहते-सहते चूर-चूर दिखाई पड़ रहे हैं। श्यामू को उस ओर जाने का यह पहला ही अवसर लगा था। वह घर की हालत देखकर सहमकर दूर खड़ा हो गया।

क्यों श्यामू डर लग रहा है सीरी महाराज का न ? मुझे भी डर लग रहा है। हम दोनों को सूने में देखकर कुछ कर न बैठें ! —बीरू ने डरी आवाज में कहा।

यों तो श्यामू के हृदय की धड़कन भी बढ़ गयी थी, पर साहस बटोरते हुए बोला—अरे नहीं, डर कैसा ! पर देखता हूँ सीरी महाराज इस छोटे-से घर में कैसे रहते हैं। धीरे-धीरे बातें करते वे लोग सीरी महाराज के द्वार पर जा पहुँचे।

*

बाहर से ही दिनेश के कराहने की आवाज आ रही थी। उसकी कराह सुनकर दोनों बड़ा घबड़ाये। पर साहस करके दिनेश को पुकारते हुए वे दोनों सीरी महाराज के आँगन में पहुँचे। देखा—दिनेश खाट पर आँखें मूँदे पड़ा है और उसकी मामी उसकी सूजी हुई बाँह में कोई लेप लगा रही है।

काकी, श्यामू और मैं हूँ। दिनेश कैसा है ?—बीरू ने पूछा।

देखते ही दिनेश की मामी ने कहा—आओ बेटा, और तुरन्त ही श्यामू को आँखें फाड़कर देखा और फिर आँखें नीची कर लीं। मामी की बातों की आवाज से दिनेश ने भी आँखें खोलीं और दोनों को बैठने के लिए कहा।

कैसे हो दिनेश ?—श्यामू ने पूछा।

यह सुनकर उसने आँखें एक बार मूँद लीं और फिर कहा—बड़ा दर्द है।

ठीक हो जायगा, दीनू !—दोनों ने कहा।

बीच ही में दिनेश की मामी ने बीरू और श्यामू को समझाते हुए कहा—बेटा, तुमलोगों का यहाँ आना ठीक नहीं है। दीनू के मामा तुमलोगों पर बहुत नाराज हैं और होने की बात ही है। तुमलोगों ने इसका हाथ तोड़कर रख दिया। और, यह दुख कब तक भुगतेगा, भगवान ही जाने! इसके

*

माता-पिता क्या कहेंगे ? कहेंगे—दरिद्र के यहाँ भेजा, जो मेरे लड़के का हाथ तुड़वा दिया।

नहीं काकी, ऐसा न कहो। हमें यहाँ आने से न रोको। हमलोग इस घटना से खुद लज्जित हैं। सीरी काका का क्रोधित होना जायज ही है, वे हमें जो सजा देंगे, हम खुशी-खुशी सह लेने को तैयार हैं, हमें कोई उज्र नहीं होगा। वे हमारे बड़े हैं।—श्यामू ने कहा।

हाँ, सो तो है पर उनका गुस्सा बड़ा खराब होता है। अच्छा तो तुमलोग अभी जाओ।

पर कल आने की आज्ञा देती हैं तो ?—बीरू ने दीन भाव में जिज्ञासा की और प्रणाम करके दिनेश को ढाढ़स बँधाते हुए दोनों चल दिये।

दीनू कैसा है ? अच्छे तो हो ?—कहते हुए सीरी महाराज ने घर में प्रवेश किया।

पर आप इतने थके-से क्यों मालूम होते हैं ?—दीनू की मामी ने उदास होकर पूछा।

नहीं, कुछ योंही, आज दवा नहीं मिली, पैसे भी तो नहीं थे। क्या कुछ पैसे का इन्तजाम कर सकोगी ?

पैसे का इन्तजाम !—यह सुनकर बेचारी दीन बासन्ती काँप-सी उठी। दवा (अफीम) के सेवन के अभाव में सीरी महाराज को ज्वर का शिकार हो जाना पड़ता है और हफ्तों उन्हें खाट पर पड़ा रहना पड़ता है। और, घर में पैसे भी न थे कि आज

उसका इन्तजाम किया जाता। सीरी महाराज के कपोल पर हाथ रखते ही बासन्ती को पता चल गया कि उन्हें खाट की शरण लेनी पड़ेगी। तुरन्त ही उसने खाट डाली और उन्हें आराम करने को कहा।

देखो जी, मेरा तो सिर फटा जा रहा है। ज्वर जोरों का चढ़ गया। अब क्या होगा ? घर में पैसे भी तो नहीं हैं।

आप चिन्ता न करें सारा इन्तजाम हो जायगा।

दूसरे दिन बीरू, श्यामू और नन्दू तीनों फिर दीनू को देखने पहुँचे। काकी-काकी……कहकर वे लोग ज्योंही आँगन में पहुँचे कि सीरी महाराज को खाट पर पड़े देखकर पीछे ठिठक गये।

ऐसी अवस्था में उनलोगों की काकी ने उनलोगों को वरदहस्त देकर उनलोगों की रक्षा की—आओ, रुके क्यों ? अरे, ये तो तुम्हारे काका हैं ! कल से इन्हें भी ज्वर हो आया है। कल तो बड़ा कष्ट था। अभी बुखार ज्यों-का-त्यों बना है।

बासन्ती की ये बातें सुनकर भी तीनों में झिझक बनी रही।

*

चादर ओढ़े लेटे-लेटे आधी बेहोशी की हालत में सीरी महाराज ने पूछा—कौन है ?

कौन है—इन दो शब्दों से तीनों की हालत ऐसी हो गयी कि काटो तो खून नहीं ।

उन तीनों की हालत देखकर श्यामू की पीठ सहलाते हुए काकी ने कहा—घबड़ाते क्यों हो ? और फिर तीनों को अपनी बाँहों से सँभालते हुए कहा—अरे, काका से भी कोई डरता है ! जैसे तुम्हारे बाबूजी वैसे ही तो ये हैं। क्या बाबूजी तुमलोगों पर कभी गुस्सा नहीं करते ?

फिर करवट बदलते हुए सीरी महाराज ने खीझे हुए भाव से पूछा—अरे, बताती क्यों नहीं ; कौन लोग हैं ?

आप आराम कीजिये । गाँव के बच्चे हैं—श्यामू, बीरू....।

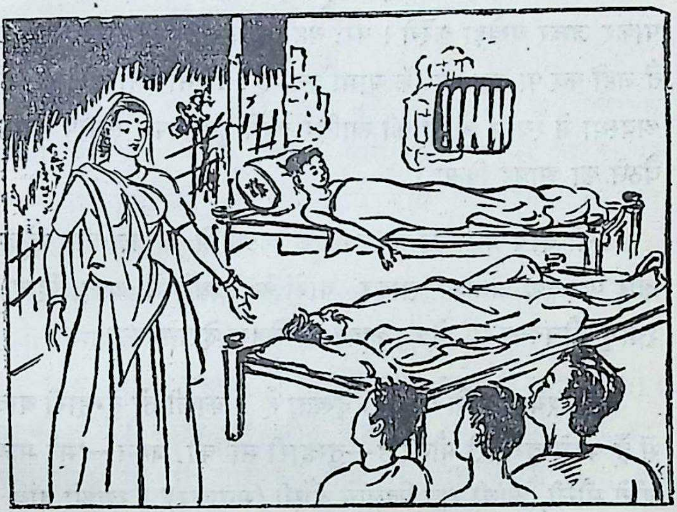
अरे, बैठो-बैठो तुमलोग तो मुझे राक्षस समझ गये हो । और मैं हूँ भी वैसा ही। अरे बाबू, कल से खाट पर पड़ा हूँ। कल तो सर फटा जा रहा था। आज सिर में दर्द नहीं है। कैसे आये श्यामू गरीब के घर ?—मुँह पर से चादर हटाते हुए सीरी महाराज एक ही साँस में कह गये।

सीरी महाराज से ऐसे नम्र शब्द सुनकर, जिसकी उन तीनों में किसीको आशा न थी, श्यामू तो सिटपिटा गया। पर, बीरू ने अपनेको सँभालते हुए कहा—काका आपलोगों के दर्शन को चले आये। दिनेश को भी देख लेना था। परसों हमलोगों

*

से बड़ी गलती हो गयी। आपसे क्षमा भी माँग लेनी है। यों तो आप हमारे बड़े हैं, आपने क्षमा कर ही दी होगी!

अरे, नहीं तुमलोग हमसे बेकार डरते हो। जो हो गया सो हो गया। अरे, ओ दीनू की मामी, बच्चों को कुछ जलपान



अरे, काका से भी कोई डरता है।—(पृष्ठ २०)

भी कराओगी, या ये लोग पहले ही दिन बिना मुँह जूठा किये ही चले जायँगे?

काकाजी, आप चिन्ता न करें। हमलोग तो माँगकर

खानेवालों में हैं। आप आराम करें। हमलोग दीनू को देखने कल भी आये थे।—श्यामू ने श्रद्धा-भाव से कहा।

ये सारी बातें दीनू खाट पर पड़ा-पड़ा देख-सुन रहा था और उसे सारी बातें आश्चर्यजनक मालूम हो रही थीं। वह सोचता था कि उसके मामा बड़े क्रूर हैं और उन तीनों को सामने पाकर जरूर बखेड़ा करेंगे। पर; यह उल्टी बात देखकर वह कुछ तै नहीं कर पा रहा था कि मामा क्या हैं! अपनी इसी उधेड़बुन की अवस्था में श्यामू आदि की खातिर करते हुए अपने समीप आकर बैठने का आग्रह किया।

इसी बीच बासन्ती ने एक-एक कटोरे में चावल का भूँजा और एक-एक बताशा लाकर चारों के हाथों में थमा दिया। श्यामू भौचक्का-सा होकर काकी का चेहरा देखने लगा।

अरे, श्यामू मुझे यों क्यों देखता है? काकी तो तुम्हारी बाद में हूँ पहले तुम्हारी मौसी हूँ—तुम्हारी मा की बहन—'मरे माय जीये मौसी, आधी रात खिलाये बौंसी (मनाकर)'। खाओ बाबू, गरीब काकी—मौसी, जो दे रही है।

नहीं काकी, कुछ नहीं। मैं तो खा ही रहा हूँ।

उसकी आँखें डबडबा आयीं। बासन्ती की आँखें अभी भी श्यामू के चेहरे के भाव का अध्ययन कर रही थीं। उसकी डबडबायी आँखें देखकर वह भी अपने काबू से बाहर हो

रही थी, पर अपनेको सम्भालकर बोली—मैं तुम्हारी मौसी होती हूँ श्यामू, यह तो तुम नहीं जानते होगे ! तुम्हारी मा मेरी मौसेरी बहन थी।

बासन्ती की बातें सुनकर चारों के चारों चकित हो गये। उस दिन के लिए तीनों ने काकी—मौसी—से छुट्टी ली और फिर कल आने का वादा करके चले गये।

❋

नित्य की तरह आज रात को भी श्यामू के पिता ने श्यामू को बुला भेजा। पर, श्यामू के चेहरे पर आज वह प्रसन्नता नहीं थी जो और रोज रात के भोजन के बाद पिता से उपदेशपूर्ण सीख सुनने के लिए रहती थी। श्यामू अन्यमनस्क-सा उदास चेहरा लिये पिता के सामने आ खड़ा हुआ। रह-रहकर उसे अपनी मा की याद आ रही थी, जो याद आज उसकी मौसी ने उसके हृदय में जगा दी थी। मा की धुँधली स्मृति उसे थी। जब वह चार साल का था, तभी उसकी मा उसे धाई की गोद में छोड़ उसके पिता को कलपते छोड़ चल बसी थी। और कह गयी थी—देखना, श्यामू को कभी उदास न होने देना।

श्यामू का उदास चेहरा देखकर, श्यामू के पिता की स्मृति दस साल पीछे दौड़ गयी और उनके सामने श्यामू की मा साकार खड़ी हो गयी, और उन्हें लगा कि उन्हें किसीने झकझोर दिया और पूछा—श्यामू आज उदास



फिर दुलार से पूछा—ग्राज फिर ग्रापकी······(पृष्ठ २५)

क्यों है ? और उन्होंने उसी प्यारभरे शब्दों में दुहराया—क्यों श्यामू, आज तू थका-सा और उदास क्यों है ? तबीयत तो ठीक है ?

पिता की बात सुनकर श्यामू सजग हो विनम्र होकर बोला—जी नहीं, कुछ थक-सा गया हूँ।

नहीं, आज तुमने कुछ खाया भी नहीं—यह कहकर उसके कपोल पर अपना हाथ रख दिया। उससे सन्तोष न हुआ तो पेट छूकर देखा। पर शरीर के ताप में कोई विषमता न देखकर कुछ आश्वस्त हुए। पर श्यामू की उदासीनता का कुछ कारण जरूर है, यह उन्होंने अनुभव किया। फिर दुलार से पूछा—आज फिर आपकी बाल-मंडली में कोई बखेड़ा हुआ है क्या ? या, सीरी ने तुमलोगों के प्रति कोई बुरा व्यवहार किया है ?

मा की याद के साथ उसे अपनी मौसी की दीन दशा और सीरी काका की दयनीय हालत भी बेतरह सता रही थी। सीरी महाराज की चर्चा पिता के मुँह से सुनकर उसे ढाढ़स हुआ।

श्यामू ने धीमे स्वर में कहा—नहीं बाबूजी, सीरी काका बेचारे तो खाट पर पड़े कराह रहे हैं। उन्हें यहाँ के लोग बेकार बदनाम करते हैं। वे बड़े भले हैं।

अरे, सीरी की किस बात से तुम इतने पिघल गये हो ?

नहीं बाबूजी, पिघलने की बात नहीं। मैं अपनी जाँची बात कह रहा हूँ। परसों की घटना के बाद हमलोग सभी सीरी काका से बहुत डरे हुए थे। यों उन्होंने हमलोगों को धमकाया भी था। पर डरते-डरते कल हमलोग उनके यहाँ गये थे, दीनू को देखने। काकी ने, जो मेरी मौसी भी हैं, हमलोगों को बड़े प्यार से बिठलाया; पर कहा कि सीरी काका हमलोगों से नाराज हैं वहाँ जाने को मना कर दिया।

तुम अकेले जहाँ-तहाँ दौड़ते-फिरते हो, अच्छा नहीं करते। वहाँ जाने की आवश्यकता ही क्या थी ?—जरा पिता ने कुछ अनुशासन-भरे शब्दों में कहा। पर श्यामू अभी पिता के प्यार की धारा में नहा रहा था; अनुशासन की बात की उसने शंका तक भी न की और कहने लगा—नहीं बाबूजी, कल हम और बीरू दोनो उनके यहाँ गये थे। दीनू को देखने की बड़ी इच्छा हो रही थी; इसीलिए फिर आज हम, नन्दू और बीरू तीनों गये थे। हमलोग तो सीरी काका को खाट पर पड़ा देखकर बहुत डर गये, पर मौसी ने हमें ढाढ़स बँधाया। और, सीरी काका ने तो खाट पर पड़े-पड़े हमलोगों का अपनी अमृतभरी बोली में जैसा सत्कार किया, वह किसी देवता से ही सम्भव हो सकता है।

तू पागल तो नहीं हो गया है! या हो सकता है, उसने नशे में—अफीम की पिनक—में तुमलोगोंपर ऐसी

बड़ी कृपा कर दी। उससे दस गाँव के लोग डरते हैं। किसी-के साथ उसका अच्छा व्यवहार नहीं सुना है। वह तो इधर तीन वर्ष से कुछ शान्त है, घर में बैठा रहता है। नहीं तो……।

नहीं तो—क्या बाबूजी ?

वे सारी बातें सुनने की जरूरत नहीं, अब सो जाओ; बड़ी रात हो गयी।

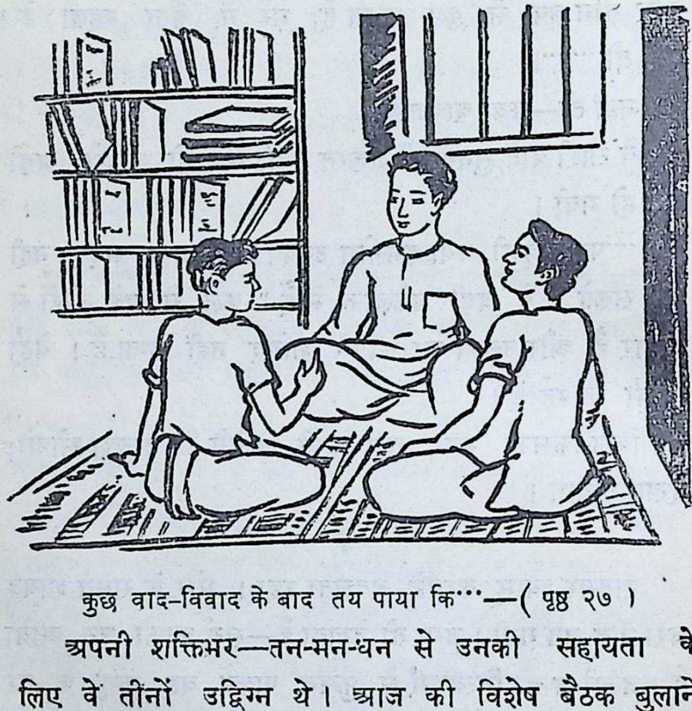
…पर बाबूजी, क्या हमलोग उनकी किसी तरह मदद नहीं कर सकते ? वे बड़ी तकलीफ में हैं। कल से बड़े जोरों से बीमार हैं और उनका घर आपने शायद नहीं देखा है। वेही हैं, जो रह रहे हैं।

किस-किसकी मदद तुम करते चलोगे ?…अच्छा सोओ; देखा जायेगा।

रातभर श्यामू करवटें बदलता रहा। भोर के समय शायद जरा नींद लग गयी। जगा तो देखता है—सूर्य काफी उठ आया है। जल्दी-जल्दी नित्यकर्म से फुर्सत पाकर वह नन्दू के घर दौड़ पड़ा। नन्दू, बीरू और श्यामू बाल-मंडली-भवन में जा पहुँचे। कुछ वाद-विवाद के बाद तय पाया कि आज चार बजे शाम को बाल-मंडली की विशेष बैठक बुलायी जाय, जिसमें बाल-मंडली के नियमित सदस्यों के अलावा गाँव के सारे लड़कों को बुलाया जाय। सीरी महाराज की दयनीय तथा रुग्ण

*

अवस्था से तीनों—विशेष कर श्यामू बड़ा चिन्तित हो उठा था।



कुछ वाद-विवाद के बाद तय पाया कि···—(पृष्ठ २७)

अपनी शक्तिभर—तन-मन-धन से उनकी सहायता के लिए वे तीनों उद्विग्न थे। आज की विशेष बैठक बुलाने का यही कारण था। नन्दू ने रवि को इसकी सूचना देने का भार दिया। श्यामू और बीरू को गाँव के सभी लड़कों को जुटाने की जिम्मेवारी रही। यों एक सूचना-पत्र भी बाल-मंडली के सदस्यों के नाम निकाला गया।

*

दस बजे श्यामू जब बाल-मंडली से लौटा तो कुछ प्रसन्न मालूम हो रहा था। उसे लग रहा था जैसे बड़ा-सा एक बोझ उसके सिर से उतर गया और अब वह आसानी से चल-फिर सक रहा है।

आते ही नौकर ने कहा—आप इतनी देर कहाँ थे ? बाबूजी ढूँढ़ रहे थे। अभी आध घंटे पहले वे शहर की ओर गये हैं। आप नहा-धोकर भोजन कर लें। शायद उनको आने में कुछ विलम्ब हो। वे मुझे खास हिदायत कर गये हैं कि छोटे बाबू को खा लेने को कहना, मेरे आसरे में न रहे।

नहीं-नहीं बाबूजी को आने दो भैया, तो साथ ही खायेंगे। जल्दी क्या है ? आज तो रविवार है।

अभी श्यामू स्नान आदि भी न करने पाया था कि रघुवीर बाबू आ पहुँचे। आते ही नौकर को पुकारा—जग्गू, अभी तक श्यामू लौटकर नहीं आया ? देखते हैं वह पागल हो जायगा। क्या सनक सवार हुई है !

....फिर धीरे-धीरे—अपनी मा का सच्चा सपूत है। दूसरे के दुःख को देखकर अपनेको भी भूल बैठता है। उसकी मा ने तो परोपकार का व्रत ही ले लिया था। सहोदरी की दिन-रात सेवा करते-करते ही तो उसकी जान गयी। उसने मरते-मरते कहा था—मेरे श्यामू को अच्छी तरह रखना। श्यामू को उदास देखकर मैं परलोक में भी सुखी न रह सकूँगी।....।

जग्गू मालिक को विचारमग्न देखकर स्तब्ध खड़ा था।

*

रघुवीर बाबू की जब विचार-धारा टूटी तो देखा—जग्गू सामने स्तब्ध खड़ा है। सजग होकर बोले—अरे। तू कब से खड़ा है ?

जी·····नहीं, अभी तो···नहीं, अभी तो···छोटे बाबू नहा रहे हैं।

अच्छा !

❋

तीनों के प्रयास से आज बाल-मंडली का भवन खचाखच भर गया था। रवि के टोले के लड़के भी आज काफी संख्या में आ जुटे थे। कुछ वयस्कों की उत्सुकता भी आज इनलोगों की सभा का सूचना-पत्र देखकर जाग उठी थीं। वे सोचते थे कि जिस सीरी ने इनलोगों को उस दिन बुरी तरह धमकाया था उसकी सेवा-शुश्रूषा करने की बात ये लोग कैसे सोच रहे हैं! हो न हो इसमें कोई रहस्य जरूर है। वे लोग शायद किसी शैतानी पर उतर आये हैं। सीरी की बीमारी की अवस्था से लाभ उठाकर उसे तंग करना चाहते हैं।

ठीक चार बजे सभा की कार्यवाही शुरू हुई। सबोंकी सम्मति से आज नन्दू सभापति बनाया गया। सभापति का आदेश पाकर श्यामू ने कहना शुरू किया—

सभापति महोदय, हमारे गुरुजन तथा भाइयो,

आज की बिशेष बैठक का क्या उद्देश्य है, यह तो आप

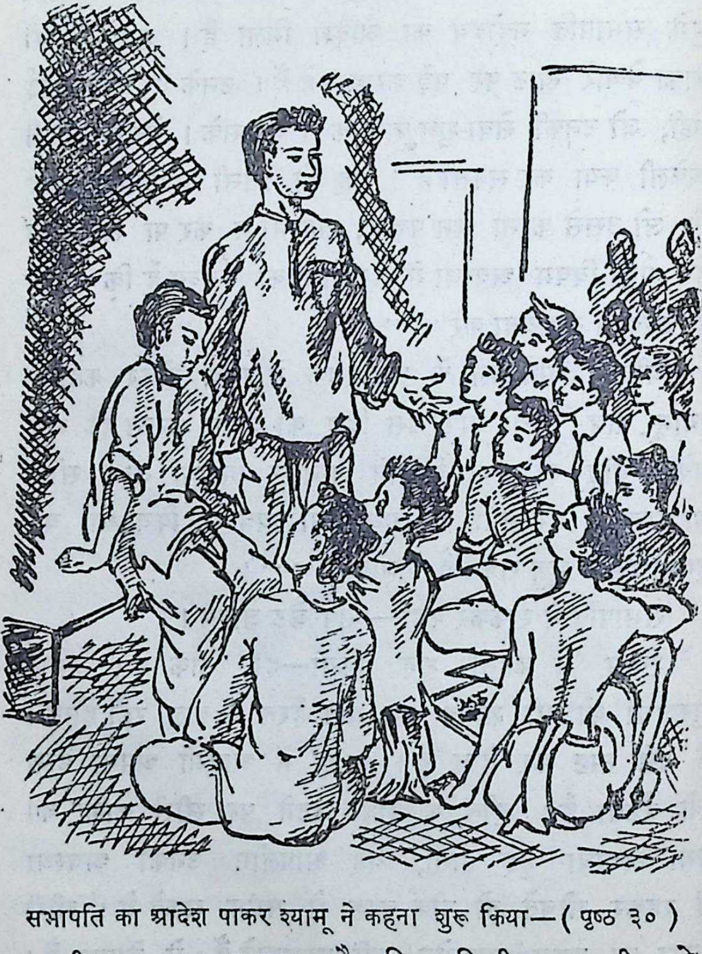
*

सभी जानते ही हैं। पर उसे पूरे रूप से स्पष्ट करने के लिए मुझे सभापति महोदय का आदेश मिला है। हमारे सीरी काका बेचारे खाट पर पड़े कराह रहे हैं। उनके घर ऐसा कोई नहीं, जो उनकी सेवा-शुश्रूषा ठीक से कर सके। बेचारी मौसी अकेली क्या कर सकती है? वह तो इतनी घबड़ायी हुई है कि जो उससे करना बन पड़ता, वह भी न कर पा सक रही है। ऐसी विषम अवस्था में हमलोगों का कर्तव्य है कि उनकी हर तरह से सहायता करें.......।

बीच में चमरटोली के एक लड़के ने खड़ा होकर कहा—श्यामू बाबू, क्या आप उस दिन की घटना तुरन्त ही भूल गये? दीनू को क्या किसीने जानकर गिराया था? सीरी महाराज ने हमलोगों के साथ जैसा व्यवहार किया था, वह हमलोग कैसे भूल सकते हैं? आदमी......।

सभापति ने रोककर कहा—आप बैठ जाइये।

श्यामू ने कहना शुरू किया—हाँ, ठीक है। हमारे गुरुजनों को भी शायद यह बात हैरत में डाल रही होगी। मैं उसे स्पष्ट कर देता हूँ। दुःख में आदमी अपना होश खो बैठता है। दीनू के हाथ टूटने पर सीरी काका की क्या अवस्था हुई होगी, यह आपलोग उनकी अवस्था में रहकर सोचते तो ठीक तरह से समझ सकते थे। सीरी काका का हृदय आपलोग नहीं पहचानते हैं, वे देवता हैं। खैर, वे कैसे हैं—क्या हैं, इससे हमें वास्ता नहीं।



सभापति का आदेश पाकर श्यामू ने कहना शुरू किया—(पृष्ठ ३०)

आदमीयत का तकाजा है कि किसी आदमी को तकलीफ में देखकर उसकी मदद करें। हममें जितनी

ताकत है उसका उपयोग ऐसे मौके पर करने से चुकना नहीं चाहिये। सीरी काका को पैसे का भी अभाव है; पर हम लड़कों के पास पैसे नहीं कि उनकी पैसे से मदद कर सकें। लेकिन, अपनी जान से तो उनकी मदद हम कर ही सकते हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरी इस प्रार्थना से सभी भाई सहमत होंगे और सेवा का व्रत लेकर बाल-मंडली की प्रतिष्ठा में चार चाँद लगा देंगे। बस, मेरी अन्तिम बिनती है कि आपलोगोंका सहयोग इस कार्य में मिलेगा और पूरे उत्साह के साथ।

इतना कहकर श्यामू तालियों की गड़गड़ाहट के बीच बैठ गया।

सभापति ने रवि से अपनी राय प्रकट करने को कहा। रवि ने शुरू किया—

सभापति महोदय तथा मेरे साथियो,

हमारी बाल-मंडली की प्रतिष्ठा बढ़े, इसमें किसे आपत्ति हो सकती है! पर हमारी जाति के लड़के इस काम में कैसे शामिल हो सकेंगे, यही सोचने में मैं हैरान हूँ। मेरा व्यक्तिगत सहयोग आपके साथ है, जिसमें, मुझे आशा है, हमारे टोले के साथी भी साथ दे सकेंगे। पर समस्या की कठिनाई हल करने का रास्ता ढूँढ़ना पड़ेगा। यह हम जानते हैं कि क्रोध क्रोध से नहीं जीता जा सकता। क्रोध पर विजय पाने के लिए क्षमा ही सबसे बड़ा अस्त्र है,

*
और सीरी काका तो हमारे गुरुजन हैं। उन्होंने अगर हमपर क्रोध ही किया, तो क्या उनका हम अपमान करें ? हमारे बाबा कहते हैं—आदमी के लिए क्रोध काल है। इस काल से सदा बचना चाहिये। बस, हमारा आपलोगों से पूरा साथ है।

बीरू ने सारी बातें स्पष्ट करते हुए कहा— रवि की बात पर तो विचारना ही होगा ; पर मुझे विश्वास है कि मसला हल हो जायगा। सीरी काका बड़े उदार हैं—उनके हृदय में वह आदमीयत है, जो साधारण आदमी के हृदय में सम्भव नहीं हो सकती।

सर्वसम्मति से यह स्वीकृत हुआ कि सीरी महाराज की सेवा-शुश्रूषा, औषधि-उपचार आदि में बाल-मंडली के सदस्य हृदय से भाग लेंगे। अपनी शक्ति-भर वे लोग सीरी महाराज की सेवा करेंगे और वे कामना करते हैं कि वे शीघ्र चंगा हो जायें !

फिर उन लड़कों की एक सूची तैयार हुई, जो इस काम में खुशी-खुशी शामिल होने के लिए तैयार हुए। इनमें सबसे पहला नाम रवि का था।

सभा से छूटते ही बीरू, नन्दू, श्यामू और रवि सीरी महाराज के घर पहुँच गये। नन्दू और रवि को

बाहर छोड़कर बीरू और श्यामू 'मौसी - मौसी' पुकारते आँगन में पहुँच गये। बासन्ती चूल्हे के नजदीक बैठकर पानी गर्म कर रही थी। श्यामू की आवाज सुनते ही दौड़ पड़ी और हुलास के शब्दों में कहा—आओ बेटा, अभी तो तुम्हारी चर्चा तुम्हारे काका कर रहे थे कि श्यामू आज नहीं आया।

हाँ, मौसी आज कुछ देर हो गयी! बाल-मण्डली में आज हमलोगों की सभा थी।······छोड़ो मौसी ये बातें। काका आज कैसे हैं?

सवेरे की हालत के सम्बन्ध में तो तुम्हें मालूम ही होगा। जिस समय डाक्टर को लेकर तुम्हारे बाबूजी यहाँ आये थे, उस समय बुखार १०१ डिग्री था। पर अभी तीन बजे से बुखार कुछ बढ़ने लगा है।

अरे, बाबूजी ने तो मुझे कुछ बताया नहीं। —प्रफुल्ल हृदय से वह बोला और उसे लगा जैसे कि वह अपनी मा की गोद में खेल रहा है और अपने बाबूजी से मचल रहा है। वह अपने में विभोर हो गया।

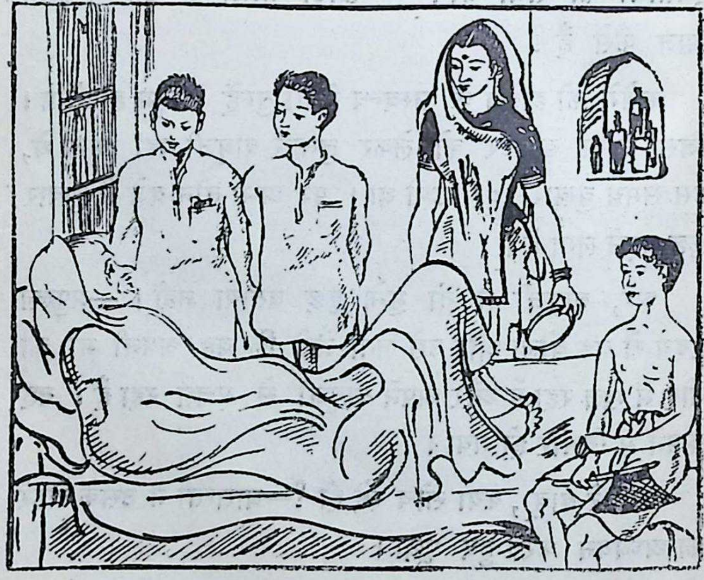
क्यों रे बाबू, क्या सोच रहे हो?—बासन्ती ने उसके चेहरे का अध्ययन करते हुए पूछा।

कुछ नहीं मौसी, यों ही। यही सोचा···चलो काका को देख आयें,—यह कहकर बीरू और श्यामू सीरी महाराज

जिस कमरे में थे, वहाँ पहुँच गये। देखा—सीरी महाराज आधे सोये आधे जगे पड़े हैं और दीनू बैठा पंखा झल रहा है ।

काका, कैसे हैं ?—श्यामू ने पूछा।

अच्छा हूँ, श्यामू ! —सीरी महाराज ने कहना शुरू किया—तुम हमारे ऊपर इतना ऋण क्यों लाद रहे हो ? तुमलोगों के प्रति तो हमारा व्यवहार अच्छा नहीं रहा है।



देखा-सीरी महाराज आधे सोये और आधे जगे पड़े हैं और दीनू बैठा पंखा झल रहा है।—(पृष्ठ ३६)

मैं प्रतित हूँ, श्यामू।……बीच में बीरू ने रोकते हुए कहा—काका, आप ज्यादा न बोलें। और इन बातों से क्या लाभ?

अरे भाई, मुझे बोलने से क्यों रोकते हो? तुमलोगोंके उपकार का बदला जीकर दे सकूँगा? ऋण से किस प्रकार मुक्ति पाऊँगा?

काका, आप ज्यादा न बोलें। एक बात की अनुमति लेने आया हूँ।—श्यामू ने विनय-भरे शब्दों में कहा।

कहो-कहो, क्या चाहते हो?—सीरी महाराज ने उत्सुक होकर पूछा।

यही कि आज हमलोगों की एक सभा थी। हमलोगोंने तै किया है कि मौसी अकेली आपकी सेवा-शुश्रूषा कैसे कर सकेंगी। हमलोग उनकी मदद करें, तो उनकी परेशानी कुछ हल्की हो। और, हमारी बाल-मंडली में चमरटोली के भी कुछ लड़के हैं, वे भी अपनी सेवा देना चाहते हैं। अगर आपको……?—श्यामू हिचकते-हिचकते कह गया।

तुम बोलने में हिचकते क्यों हो? पर तुम बच्चे हमारे पीछे क्यों परेशान होओगे? तुम्हारी मौसी से जैसे बन पड़ रहा है, वह बेचारी कर ही रही है। तब, तुम्हारी इच्छा और प्रोग्राम के विरुद्ध मैं कुछ बोल भी नहीं सकता, और चमरटोली के लड़के? वे तो हमसे अच्छे हैं। तुमलोगोंने

जैसा तै किया है, वैसा ही होगा।—सीरी महाराज ने रुक-रुककर अपनी अनुमति दे दी।

श्यामू और बीरू दोनों प्रसन्न होकर बोल उठे—तो बुलाऊँ? नन्दू और रवि बाहर खड़े हैं!

बासन्ती ने कहा—अरे इतनी देर से तुमने बताया क्यों नहीं कि वे लोग बाहर खड़े हैं। बुलाओ, बुलाओ!

श्यामू उत्साहित होकर बाहर से नन्दू और रवि को बुला लाया।

आओ भाई, तुमलोग बाहर क्यों खड़े थे?—सीरी महाराज ने कहा।

थोड़ी देर सभी चुप रहे। फिर श्यामू ने निस्तब्धता भंग करते हुए कहा—तो अभी आज्ञा दीजिये। एक घंटे के बाद हम और बीरू दोनों आयेंगे। आज हमलोगोंकी बारी है। कल से फिर बारी-बारी से दो लड़के रहा करेंगे। अगर दिन में भी आवश्यकता पड़ी तो व्यवस्था हो जायेगी।

···तो, तुम दोनों का भोजन यहीं बनाऊँगी।—बासन्ती ने स्नेह-भरे शब्दों में कहा।

नहीं मौसी, हमलोग खाकर आयेंगे।—श्यामू ने कहा और चारो आँगन से बाहर हो गये।

ठीक सात बजे श्यामू और बीरू सीरी महाराज के यहाँ जा पहुँचे। श्यामू साथ में एक दरी, दो बिछावन की चादरें, दो ग्लास, थर्मामीटर आदि सामान ले आया था। आते ही दोनों ने मिलकर सीरी महाराज का पहलेवाला बिछावन, जो चट का था और जिसपर परदा डालने के लिए चादर के रूप में बासन्ती ने अपनी फटी साड़ी बिछा दी थी, बदल डाला। फिर पैर-हाथ धोकर ज्वर-ताप की तालिका बनायी और थर्मामीटर लगाकर ताप का मान देख लिया। सीरी महाराज कुछ सो-से रहे थे। बीरू और श्यामू ने बासन्ती और दीनू को फुर्सत दे देनी चाही; पर बासन्ती इन लड़कों को रात-भर जगाने से डर रही थी। आखिर श्यामू के बहुत कहने-सुनने पर वह दस बजे जाकर सो गयी। श्यामू ने बीरू से भी रात के पहले भाग में सो जाने को कहा, पर बीरू राजी न हुआ। रात-भर दोनों जागते रहे और सीरी महाराज के उपचार—पानी पिलाने, औषधि देने, पेशाब-पाखाना कराने आदि कामों में निःसंकोच भाव से डटे रहे। दोनों ने अपनी आँखें झपने तक न दीं।

करीब तीन बजे रात को सीरी महाराज जगे और बड़बड़ाने लगे। श्यामू ने झट तापमान देखा और कोई विषमता न पाकर निश्चिन्त हुआ। सीरी महाराज भी सो गये।

श्यामू, सीरी काका अभी क्या बक रहे थे ? 'दवा के लिए भी पैसा तुम्हारे पास नहीं है ? कहो तो अब मेरा क्या होगा ? तुम जानती हो कि बिना दवा के मेरी हालत क्या हो जाती है।'

*

और भी कितनी बातें बोल गये। क्यों, श्यामू।—बीरू एक ही साँस में धीरे-धीरे चारों ओर देखते हुए कह गया।

लेकिन घबड़ाने की तो कोई बात नहीं है। बुखार तो १०१ डिग्री है। -श्यामू जरा सशंकित होकर बोला।

थोड़ी देर तक दोनों एक दूसरे का मुँह देखते रहे। फिर बीरू ने शान्ति भंग करते हुए कहा—श्यामू, सीरी काका से गाँव का कोई आदमी खुश नहीं। और देखो, ये गाँव से बाहर किस सूनसान में इस झोपड़ी में हैं। निश्चिन्त रहते हैं। मालूम होता है सीरी काका खूब गरीब हैं, बर्तन का अभाव, कपड़े का अभाव, सारे अभाव ही अभाव हैं, श्यामू।

बाबूजी भी ऐसा ही कह रहे थे कि इनसे कई गाँव के लोग डरते हैं। पर क्यों ?—मैंने पूछा था। उन्होंने बतलाया नहीं और बात टाल दी। मेरी समझ में नहीं आता कि बात क्या है। ये कितने अच्छे हैं, बीरू। रात्रि की साँय-साँय में और कितनी बातें दोनों सवेरे तक करते रहे।

बासन्ती ने सवेरे उठकर दोनों को अब फुर्सत देनी चाही। पर वे दोनों मरीज को पेशाब-पाखाना कराकर, मुँह-हाथ धुलाकर और सारी बातें समझाकर सात बजे घर जाने को तैयार हुए।

श्यामू ने पूछ लिया—मौसी दिन में भी रहने की जरूरत हो, तो कहो ? इन्तजाम हो जायगा।

नहीं बाबू, दिन में मैं सँभाल लूँगी। रात में भी तो सँभाल ही लेती। हाँ, श्यामू किसी तरह दवा मँगवाने का इन्तजाम कर देना।

सब ठीक हो जायगा, काकी।—बीरू ने कहा और दोनों बासन्ती से आज्ञा लेकर चले गये।

❋

बाल-मंडली के सदस्यों की निःस्वार्थ सेवा से सीरी महाराज जी उठे—उन्होंने नया जीवन पा लिया। अब चलने-फिरने लगे हैं। पर उनका चित्त चंचल हो उठा है। बच्चों के त्याग और निर्मलता को देखकर उनपर अजीब प्रभाव पड़ गया है। अपने अतीत जीवन की एक-एक घटना की याद उन्हें सताने लगी। सिनेमा के चित्रों की तरह उनके जीवन की सारी घटनाएँ उनकी आँखों के सामने दिन-रात गुजरने लगीं।

मेरा जीवन क्या था और क्या है? और इन बच्चों ने, जिन्हें मैंने उस दिन बुरी तरह फटकारा था, अपने आत्मीय से भी बढ़कर मेरी सेवा की। मुझे जिला दिया। क्या देकर मैं इनसे उऋण हो सकूँगा? और ये रघुवीर भाई! अपने लड़के की बात पर अपनी सारी जायदाद लुटा देने को तैयार हैं। श्यामू को खुश करने के लिए वे अपनी जान तक दे सकते

*

हैं।—गम्भीर मुद्रा में खाट पर लेटे सीरी महाराज ये सारी बातें सोच रहे थे।

बासन्ती यह अवस्था देखकर कुछ डर-सी गयी। डरते-डरते विनीत होकर कहा—अभी इतने कमजोर हैं, क्या चिन्ता समा गयी ?

कुछ नहीं। श्यामू और रघुवीर भाई और ये गाँव के बच्चे !—एक लम्बी निसाँस फेंकते हुए सीरी महाराज ने कहा।

तो क्या हुआ ? ये कितने भले हैं ! श्यामू के पिता ने हमलोगों की जो मदद पैसे से की है, वह कैसे वसूल होगा यही न सोचते हैं ?—बासन्ती ने धीमे स्वर में अपनी विज्ञता प्रकट करते हुए कहा।

अरे तुम भी क्या बे-सिर-पैर की बातें करती हो ? पैसा तुमसे कौन माँगने आता है ? मैं तो सोचता हूँ कि इन बच्चों के उपकार का कैसे बदला दूँगा ?…

मौसी, मैं हूँ, श्यामू।—कहते हुए श्यामू और बीरू इस बीच आ पहुँचे।

आओ, श्यामू-बीरू। आजकल किसको जिलाने की फिक्र में हो कि दिखाई भी नहीं पड़ते ? मालूम होता है, जैसे अपने काका और मौसी को भूल ही गये।—सीरी महाराज ने प्यार-भरे शब्दों में कहा।

नहीं काका, आपके और खासकर मौसी के दर्शन के

लिए मैं खुद छटपटा रहा था। पर परीक्षा सिर पर आ गयी है। पढ़ने में जरा कुछ विशेष समय लगाना पड़ता हैं।—संकोच से रुकते-रुकते श्यामू बोला।

मैं तो परसों तुम्हारी ओर गया था। जग्गू ने तुमसे नहीं बताया ?

जी बताया था। सोचा काका क्यों आये थे ? चलूँ दर्शन कर आऊँ।···

बीच ही में सीरी महाराज बीरू को उद्देश्य करके बोले—अरे बीरू, तुम तो कुछ बोलते ही नहीं। कुछ नाराज हो क्या ?

नहीं काका।—बीरू ने कहा।

मौसी, हमलोग भूखे ही चले जायेंगे ?—श्यामू ने कहा।

यह लो, मेरे बच्चे घर से भूखे चले जायेंगे!—कहते हुए बासन्ती ने बीरू और श्यामू के हाथों में घी से सना चिउरा-भूँजा से भरी तश्तरियाँ थमा दीं। और कहा—देखो बाबू, दीदी—तुम्हारी मा—यह चिउरा-भूजा बड़ा पसन्द करती थीं। हम दोनों यह भूँजा खूब खाती थीं।

मा का नाम सुनते ही मा की याद में एक क्षण के लिए श्यामू डूबने-उतारने लगा—मा कैसे मर गयी ? मैं असहाय हूँ—बिना मा का एक दीन अनाथ लड़का। मेरी मा···!

श्यामू, खाते क्यों नहीं ? तुमको यह भूँजा अच्छा नहीं लगता है क्या ?—सीरी काका ने कहा।

*

श्यामू सचेत होकर कुछ लज्जित-सा हो गया और बिना कुछ उत्तर दिये खाने लगा।

अच्छा श्यामू, क्या मैं तुम्हारी बाल-मंडली का सदस्य नहीं हो सकता ?—ऐसे प्रसन्न मुख से सीरी काका ने यह बात कही कि लगा, जैसे एक बड़ी भारी जटिल समस्या, जो उन्हें बहुत दिनों से सता रही थी, का हल उन्हें मिल गया हो।

बीरू और श्यामू दोनों हँसने लगे। बासन्ती ने भी उनलोगों का साथ दिया।

अरे, तुम लोग हँसते हो ?—जरा गम्भीर होकर सीरी महाराज ने कहा।

नहीं काका, भूल हो गयी।—बीरू ने कहा।

नहीं, नहीं, भूल होने की बात नहीं। मैं तुमलोगोंसे यथार्थ में पूछ रहा हूँ। क्या एक बूढ़ा बच्चों की तरह काम नहीं कर सकता ? यह तो कहावत भी है—बूढ़े का स्वभाव बच्चों-सा होता है। मुझे शामिल करके तो देखो, मैं कुछ कर सकता हूँ या नहीं। अगर तुमलोगोंके काम के लायक न हुआ तो मुझे निकाल देना।

काका, आप नाराज हो गये ?—श्यामू ने विनीत होकर कहा।

ना भाई, मुझे शासिल करना ही होगा ?—विश्वास तथा अधिकार के साथ सीरी महाराज ने कहा।

तो श्यामू, तुम्हारे काका अब तुमलोगों के साथ खेलेंगे !—बासन्ती ने मजाक करते हुए कहा।

मौसी, काका हमारे नायक होंगे। हमें रास्ता बतायेंगे। और हमलोग सच्चे सिपाही की तरह अपने सेनापति का अनुसरण करेंगे। हम सभी बच्चे हैं। हमें अनुभव नहीं है और हमारे पूज्य—बड़े—तो हमसे उदासीन ही हैं।—श्यामू कहता ही चला जाता।

श्यामू की प्रत्येक बात को, सीरी महाराज उसका मुँह देखते हुए, बड़े ध्यान से सुन रहे थे और पल-पल उनके चेहरे का भाव बदलता जाता था। अन्तिम वाक्य—हमारे पूज्य तो हमसे उदासीन ही हैं— सुनकर सीरी महाराज का चेहरा पश्चात्ताप से लाल हो उठा। अपने ऊपर उन्हें बड़ा गुस्सा आया—अपनेको वे धिक्कारने लगे। उनके सामने उस रात का चित्र नाचने लगा, जिस रात को उन्होंने बच्चों के अरमान—बाल-मण्डली—के सारे सामान को तितर-बितर कर दिया था। उनके भीतर राक्षस नाच उठा। वे चाहने लगे कि अभी जाकर समाज के ठेकेदारों का गला मरोड़ दूँ, जिन्होंने मुझे इन निर्मल बच्चों को तंग करने के लिए उसकाया था। वे गुस्से में खाट से उठ खड़े हो गये।

क्यों काका ?—श्यामू उनके चेहरे का भाव देखकर जरा भयभीत होकर विनीत भाव से बोला।



क्यों रे कुर्बान, तुम्हारी पठिया रोज भाग जाती है ले, ले जा...। (पृष्ठ४७)

बैठिये काका।—बीरू ने कहा।

उन दोनों की मीठी बातें सुनकर सीरी महाराज का गुस्सा जाता रहा। जैसे लगा कि धू-धू करती आग पर

*

आकाश ने ठण्ढी हवा के साथ पानी बरसा दिया। थोड़ी देर के लिए सभी शान्त और गम्भीर दिखाई पड़ने लगे।

बाहर की ओर से आँगन की ओर भागते हुए बकरी के एक बच्चे की में-में ने आँगन के शान्त वातावरण को भंग किया। बकरी के बच्चे के पीछे चार साल का लड़का चिल्लाता हुआ दौड़ा आया—काकी पकड़ दो, पकड़ दो।

बासन्ती ने बकरी के बच्चे को पकड़कर लड़के को सुपुर्द करते हुए कहा—क्यों रे कुर्बान, तुम्हारी पठिया रोज भाग जाती है ? ले, ले जा। कल से अगर हमारे यहाँ आयी तो फिर जाने न दूँगी। पकड़कर बाँध रखूँगी।

कुर्बान हँसता हुआ चला गया और कहता गया—जरूर आयेगी और तुमको पकड़कर देना होगा। नहीं तो छीनकर ले जाऊँगा।

कुर्बान····काकी····छीनकर ले जाऊँगा आदि बातें सुनकर बीरू और श्यामू दोनों चकित थे। वे सोचने लगे—कुर्बान एक मुसलमान का बच्चा होकर भी काकी से कितना लग गया है—किस अधिकार के साथ कहता है कि छीनकर ले जाऊँगा, जरूर आयेगी····।

बासन्ती ने देखा श्यामू कुछ सोच रहा है। दुलार से पूछा—बाबू मेरे, क्या फिकिर हो गयी ? बकरी का बच्चा लेना चाहते हो ? और मुस्कुराने लगी।

बीरू, श्यामू और सीरी काका तीनों में किसीकी हँसी न

रुकी। सीरी महाराज ने कहा— मौसी तुम्हें बकरी का बच्चा देना चाहती है, तो ले जाओ।

आप क्यों बोलते हैं? यह तो मेरे और श्यामू के बीच की बात है।—बासन्ती ने जरा गौरव से कहा।

अच्छा, जाने दो ये बातें। ठीक रहा न कि मैं तुम्हारी बाल-मण्डली का सदस्य हो सकूँगा?—सीरी महाराज ने निवेदन-सा करते हुए पूछा।

कुछ बोलते नहीं बीरू?—फिर उन्होंने पूछा।

हाँ काका, आपकी आज्ञा तो माननी ही पड़ेगी। पर हमें बाल-मण्डली के सारे सदस्यों की राय लेनी पड़ेगी कि हमारी बाल-मण्डली में आप-जैसे वयस्क लोग शामिल हो सकते हैं या नहीं।—श्यामू ने संस्था के सच्चे सदस्य की हैसियत से अपने काका से निवेदन किया।

क्यों बीरू, यही करना ठीक होगा न?—बीरू के कंधे को अपने दाहिने हाथ से हिलाते हुए श्यामू ने कहा।

अरे, भाई तुम स्वयं विज्ञ हो, मैं क्या कहूँ?—बीरू जरा गम्भीर था।

काका और मौसी को प्रणाम कर दोनों आँगन से बाहर हो गये।

❋

श्यामू आदि की परीक्षा समाप्त हो चुकी है। वे सभी जरा निश्चिन्त-से मालूम पड़ते हैं। श्यामू को परीक्षा से तो

*

फुर्सत मिली; पर कुर्बान की वह अधिकारभरी बात—जरूर आयेगी और तुमको पकड़कर देना होगा तथा सीरी काका का उससे वह निवेदन कि तुम्हारी बाल-मंडली का मैं सदस्य हो सकूँगा—दोनों उसके दिमाग और दिल को चंचल किये हुए थे। सोचता—सीरी काका बाल-मंडली में शामिल होकर क्या करेंगे ? और, कुर्बान कितना सुन्दर लड़का है ! मुसलमान है तो क्या, मौसी को वह काकी कहता है । कहाँ मालूम होता है कि वह मुसलमान है और मैं हिन्दू ! कैसे लोग कहते हैं कि हिन्दू और मुसलमान दो हैं ? कैसे परसाल शहर में हिन्दू-मुसलमान लड़ पड़े थे ? होगा कोई कारण !

अरे नन्दू, आओ कहाँ गायब हो गये थे हुजूर।—कहते हुए अपनी बगलवाली कुर्सी पर उसे जबर्दस्ती बैठा दिया।

जी, मैं कहाँ गायब था ? अच्छा बताइये तो सही, बड़े ध्यानमग्न अभी बैठे थे । परीक्षा तो समाप्त हो गयी; फिर शान्त होकर कौन-सा खाका खींच रहे थे ?—नन्दू ने कहा।

यही तो कई दिनों से सोच रहा था कि तुमलोगोंसे पूछूँ कि समस्या कैसे हल होगी । उस दिन हम और बीरू सीरी काका के यहाँ गये थे । उन्होंने अजीब सवाल हमलोगों के सामने रखा। मेरी तो समझ में नहीं आया कि वे यह क्या कह रहे हैं ।

*

असल बात क्या है सो तो बतलाते ही नहीं, वह और यह कहते चले जा रहे हो।—नन्दू ने धमक देकर कहा।

तुम तो तुरन्त घबड़ा जाते हो। मैं तुम्हारी उत्सुकता को जगा रहा हूँ।—श्यामू ने हँसते हुए कहा।

मेरी उत्सुकता जाग गयी साहब, अब तो बताइये।—नन्दू ने कहा।

नहीं, अभी नहीं, बीरू को आने दो। वही तुमसे बतायेगा। मेरा यह काम नहीं है।—नन्दू की उत्सुकता को बुरी तरह जगाते हुए श्यामू ने कहा।

आखिर तुमसे किसने कहा था कि मुझे बताओ ?—नन्दू ने परेशानी के साथ कहा।

अच्छा जग्गू जरा बीरू को तो बुला लाना। कहना कि अभी तुरन्त बुलाया है, जरूरी काम है।—श्यामू ने जोर से पुकारते हुए कहा और नन्दू को कमरे में छोड़कर बाहर चला गया।

नन्दू कमरे में बैठा श्यामू पर बेतरह आग बबूला हो रहा था। और, श्यामू बाहर बीरू का आसरा देखने लगा। दस मिनट बाद बीरू को आते देख श्यामू कमरे में गया और नन्दू को मजाक-भरा आश्वासन देते हुए कहा—नन्दरामजी, बिलकुल बिगड़े बैठे हैं! बीरू महाराज आ रहे हैं, आपको अभी सारी बातें मालूम हो जायँगी, घबड़ाइये नहीं।

*

बीरू, तुम भी अजीब आदमी हो। तुमको खबर भेजी गयी कि तुरन्त आओ, तो तुमने आध घंटा लगा दिया। और, श्यामू पर तो इतना गुस्सा आ रहा है कि क्या बताऊँ ?—खीझा हुआ-सा नन्दू बोला।

आध घंटा ! अभी तो तुरत जग्गू गया था और दौड़ता आ रहा हूँ ; बल्कि जग्गू अभी पीछे ही है।—बीरू ने आश्चर्यचकित होकर कहा।

बीरू, नन्दू महाराज आजकल एक दिन-रात को छिआनवे घंटे का मानने लगे हैं।—मजाक करते हुए श्यामू ने कहा।

अच्छा रहने दीजिये अपनी ये सारी बातें।—श्यामू को उद्देश्य करते हुए नन्दू ने कहा।

अच्छा बीरू, बताओ, सीरी काका की वह कौन-सी बात है, जिसे बताने के लिए श्यामू मुझे एक घंटे से परेशान कर रहा है ? वह ऐसी बात है जो तुम्हें ही बताने का अधिकार है।

तुम भी अजीब पागल हो, श्यामू। नन्दू बेचारा इतना परेशान है और तुमने इसे वह बात नहीं बतायी। बताते क्यों नहीं ?—बीरू भी जरा मजाक में आ गया।

देखते हैं तुम भी यह-वह पर उतर आये। अच्छा, तो मैं चला।—कहते हुए नन्दू उठने का उपक्रम करने लगा।

श्यामू ने कहा—नन्दू, तुम तो बिलकुल नाखुश हो गये ;

अच्छा तो सुनो—सीरी काका कह रहे थे कि मुझे भी अपनी बाल-मंडली का सदस्य बना लो। उस समय तो हम दोनों अवाक् हो गये। पर, इतना कह आये कि सबोंकी राय लेनी पड़ेगी।



····तो सीरी महाराज कंधे पर कुदाल और हाथ में टोकरी लिये आगे-आगे चलते हैं।—(पृष्ठ ५३)

इसमें राय लेने की कौन-सी बात है ? पर वे हमलोगों की तरह लड़के तो हैं नहीं ! उन्हें यह कौन जोश पैदा हो गया ?—जरा गम्भीर होकर नन्दू ने कहा।

तो राय ले ली जाय, क्यों ? सभा बुलायी जाय ? मेरा तो विचार है कि एक सूचना निकालकर प्रत्येक सदस्य की राय जान ली जाय। क्यों बीरू ? नहीं तो जैसा कहो।—श्यामू ने कहा।

*

ठीक तो है। लिखो सूचना—निवेदन।—बीरू ने कहा।

सीरी महाराज बाल-मंडली के सदस्यों की सूची में आ गये हैं। यों 'निवेदन' पर कई सदस्यों ने उन्हें न शामिल किया जाय, ऐसी राय प्रकट की थी; पर अधिकांश शामिल करने के पक्ष में थे।

सीरी महाराज बच्चों की तरह खेलते हैं। बाल-मंडली के विभिन्न प्रोग्रामों में भाग लेते हैं। कभी देवीपुर गाँव की सफाई होती है तो सीरी महाराज कंधे पर कुदाल और हाथ में टोकरी लिये आगे-आगे चलते हैं। तो, कभी चमरटोली में हैजा का प्रकोप देखकर बच्चों (बाल-मंडली के सदस्यों) को अलग कर अपने ही सेवा-शुश्रूषा में कूद पड़ते हैं। उस दिन चमरटोली की ददनी बुढ़िया मर गयी तो सीरी महाराज वहाँ उपस्थित थे। किसीके घर कोई बीमार है तो दवा लाने सीरी महाराज शहर दौड़े जा रहे हैं। किसीका कोई छोटा बच्चा मर गया है तो सीरी महाराज बच्चे के मृतक शरीर को गोद में लिये श्मशान-घाट की ओर चले जा रहे हैं। किसी-की सेवा करने और दुख में काम देने के लिए उन्हें इनकार नहीं।

श्यामू, बीरू, नन्दू सभी सीरी काका की निःस्वार्थ

सेवा-भावना और परिश्रम देखकर परेशान थे। दस गाँव लेकर, यहाँ तक कि शहर में इस बाल-मंडली की सेवा की शोहरत हो गयी। शोहरत के सेहरे का कारण सचमुच सीरी काका हैं, यह सभी सदस्य अनुभव करते थे।

गाँव के बड़े-बूढ़े सभी हैरान थे, सीरी महाराज के करतब देखकर।

सीरिया को क्या सनक सवार है? रात-दिन इन शोहदों के साथ लगा रहता है········और, हाँ वह तो खुद शोहदा था।

कहीं सब लड़कों को वह अपने साँचे में न ढाल दे, अफीमची, चोर-बदमाश, लड़ाकू न बना दे!

सबसे तो आश्चर्य मुझे लगता है रघुवीर का! अपने बेटे के प्यार में वह अन्धा हो गया है।

अपने किये का फल भोगेंगे। वह दिन दूर नहीं, जब श्यामू के प्रति उनका अति प्यार उनके सिर पर चढ़कर बोलेगा—घर से भागना पड़ेगा उन्हें।

जाने दीजिये ये बातें। भागीरथ तम्बाकू चढ़ाओ।

सुना है श्यामू, पटना के नजदीक किसी गाँव में हिन्दू-मुसलमान दंगा हो गया है।—नन्दू ने घबराहट के साथ कहा।

हाँ, भाई सुना है और सुनते हैं कि यहाँ के लोग भी

*

आतंकित और उत्तेजित हो उठे हैं।—श्यामू ने गम्भीर होकर कहा।

क्या उपाय है, श्यामू ?

हमलोगों के करते क्या बनता है ? सुनते तो हैं बड़े-बड़े नेता लोगों में विश्वास और धैर्य्य उत्पन्न करने के लिए सचेष्ट हैं; पर आतंक बढ़ता ही जाता है।—जरा निराशाभरी आँखों से श्यामू बोला।

नहीं अपनी शक्ति-भर तो कुछ करना ही चाहिये। सीरी काका की राय लेनी चाहिये। वे क्या कहते हैं ?—नन्दू ने विश्वास के साथ कहा।

इसी बीच रवि परेशान-सा आकर धम्-से बैठ गया। हाँफते-हाँफते कहने लगा—श्यामू, आज रात में अनर्थ हो जायगा। हमारी बाल-मण्डली के रहते अगर ऐसा हमारे गाँव में हो जाय, तो हमारे लिए बड़ी शर्म की बात होगी। गाँव की मुसलिम-टोली शायद आज बचने न पायेगी। लोगों ने मुसलिम-टोली पर आज रात में धावा बोलने की बात सोची है। शायद देवशरण शर्मा इन राक्षसों के अगुआ हैं। कुछ करो श्यामू, ताकि यह राक्षसी लीला रुक जाय !...

मैं भी वही सोच रहा था। पर मामला यहाँ तक आगे बढ़ गया है, यह मुझे पहले मालूम नहीं था।—श्यामू कहते-कहते खड़ा हो गया।

तो चलो सीरी काका के यहाँ। बीरू को भी बुला लो, नन्दू। तुम्हारे टोले के अगर इसमें कोई हों रवि, तो तुम जाओ उन्हें रोकने की कोशिश करो।

× × ×

मौसी, मौसी, काका कहाँ हैं?—घबड़ाते हुए श्यामू ने कहा और तीनों—नन्दू, बीरू और श्यामू, बासन्ती के रसोई-घर के दरवाजे पर जा पहुँचे।

बाबू इतने घबड़ाये क्यों हो, क्या बात है? बैठो।—बासन्ती ने प्यार से आग्रह किया।

नहीं, काकी बैठने का समय नहीं है। बताओ, काका कहाँ हैं?—बीरू ने कहा।

अभी तो थे ही। रहमत आया था, उन्हें बुलाने कि चाचा बुला रहे हैं। सुनते हैं कि मुसलमान-टोली के सारे लोग बहुत डर गये हैं।

तो चलें उसी तरफ। हमलोग भी यही सुनकर काका से सलाह लेने दौड़े आये हैं।—श्यामू ने कहा।

तुमलोग क्यों परेशान हो? तुम बच्चों का यह काम नहीं है।—बासन्ती ने कहा।

बासन्ती की बात अनसुनी करके तीनों मुसलमान-टोली की ओर चल पड़े।

वहाँ औरत-मर्द-बूढ़े-जवान-बच्चे सीरी काका को घेरे खड़े हैं। सबोंके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही हैं। और, एक आदमी

कह रहा है—हमलोगों के कितने पुरखे तो यहाँ की मिट्टी में ही दफनाये गये। हमलोग भाई-भाई होकर कब से रह रहे हैं। शादी-ब्याह में हमारी बहू-बेटियाँ आपके घर जातीं, आपके घर की हमारे घर। कहाँ मालूम होता है कि हमलोग दो हैं। मुहर्रम के जुलूस के सरदार तो आप ही रहते आये हैं। आपके हुकुम के बिना पहलाम तक नहीं होता। फिर हमलोगोंसे क्या कसूर हो गया, जो हमलोगों की जानें आफत में हैं ?

नहीं भाई, घबड़ाओ नहीं। सब ठीक हो जायगा।—सीरी काका ने आश्वासन देते हुए कहा।

काका, आप यहाँ हैं ?—तीनों ने एक ही साथ कहा।

तुमलोग यहाँ कैसे पहुँच गये ?—सीरी महाराज ने पूछा।

मौसी ने बताया कि आप इधर ही आये हैं।—श्यामू ने उत्तर दिया।

हाँ, अभी रहमत बुलाने गया था। गाँव के लोग भी अजीब हैं। ये लोग काफी डर गये हैं।—सीरी महाराज ने कहा।

यही बात लेकर तो हमलोग भी आये हैं, काका। —बीरू बोला।

कुछ उपाय होना चाहिये काका, ताकि कोई गड़बड़ी न होने पाये।—श्यामू ने कहा।

होगा बाबू, और·····आपलोग घबड़ायें नहीं। हमारे सरदार का हुक्म हो गया। ये गाँव में शान्ति भंग न होने देंगे। देखिये, हमारी जान रहते आपलोगों का कोई भी बाल बाँका न कर सकेगा। सबोंको हम समझायेंगे कि बखेड़ा न होने पाये। अगर वे लोग बखेड़ा करने पर ही उतारू होंगे तो अभी भी हमारे बाहु में वह बल है, जो किसी भी तगड़े को छठी का दूध याद करा देगा। आपलोग



औरत-मर्द-बूढ़े-जवान-बच्चे सीरी काका को घेरे खड़े हैं।—(पृष्ठ ५६-५७)

निश्चिन्त होकर खाइये-पीजिये। न हो तो बच्चों और महिलाओं को मेरे घर भेज दीजिये।

सीरी महाराज की इन बातों से सारी मुसलमान-टोली गद्गद हो गयी। वे लोग अजीब ताकत अनुभव करने लगे। सबोंके घर चूल्हा-चक्की बन्द थी। सभी अपने खाने-पकाने की फिक्र में लग गये। सभी बच्चे अपने-अपने घर में भयभीत छिपे बैठे थे। कुर्बान काकी के यहाँ जाने के लिए मचल रहा था; पर उसकी मा उसे अलग होने देना नहीं चाहती थी।

मुसलमान-टोली का तो भय जाता रहा था; पर आशंका अभी भी बनी थी—सीरी महाराज कितना क्या करेंगे? अगर सारा गाँव उमड़ पड़ेगा, तो वे अकेले क्या कर सकते हैं, बेचारे?

सीरी महाराज तीनों के साथ घर-घर घूम रहे हैं। लोगों को ये लड़के आरज़ू-मिन्नतें कर रहे हैं; पर लोग टाल-मटोल की बातें करके इन्हें टालते हैं। लोगों में उत्तेजना है कि ये मुसलमान बड़े खतरनाक हैं।

आखिर सीरी महाराज ने तै किया कि पाँच-सात बड़े-बूढ़ों को बुलाकर सारी बातें समझायी जायँ। अगर इसपर ये लोग न मानेंगे, तो देखा जायगा।

इस तरह घूमते-घूमते बारह बज गये। सीरी महाराज ने तीनों को विश्वास दिलाते हुए कहा तीसरे पहर सबों-

को बुलाकर मैं समझा देता हूँ कि कोई गड़बड़ी न हो। अगर न मानेंगे, तो मुझे मुसलमान-भाइयों की रक्षा के लिए तैयार रहना पड़ेगा। तुमलोग जाओ, खाओ-पीओ। ज्यादा परेशान न होओ।

तीसरे पहर फिर तीनों सीरी महाराज के यहाँ पहुँचे। सीरी महाराज को लेकर तीनों लच्छू बाबा के बैठकखाने में पहुँचे। वहाँ मजलिस जमी हुई थी निश्चिन्त, जैसे कहीं किसी बात की आशंका ही नहीं। इन चारों को देखकर सबोंके कान खड़े हो गये। नब्बू चाचा कुछ पूछना ही चाहते थे कि सीरी महाराज ने कहना शुरू किया—आपलोगों की दुनिया ही दूसरी मालूम होती है। गाँव में कहाँ क्या हो रहा है, आपलोगों को जरा भी खबर नहीं।

कुछ कहो भी तो सही, बात क्या है? और इन लोगों को साथ कैसे ले आये?—नब्बू चाचा ने पूछा।

इनलोगों को ही तो आपलोगोंकी नाक की फिक्र है। आपलोगोंको तो उसका ध्यान ही नहीं, रहे चाहे जाय। हमारे गाँव के मुसलमान-भाइयों, उनकी बहू-बेटियों और मासूम बच्चों की क्या हालत है, जरा चलकर देखें। उनके प्राण घुट रहे हैं और आप यहाँ आनन्द में विभोर हैं—ताश और शतरंज की बाजी लगाये बैठे हैं।—सीरी महाराज एक साँस में कह गये।

कहो भी तो सही, क्या बात है?—लच्छू बाबा ने निश्चिन्तता से पूछा।

बाबा, गाँववालों ने आज मुसलमान-टोली पर रात में धावा बोलने की बात सोची है। इसका क्या फल होगा, गाँव में सिवा खून-खराबी के और क्या हाथ लगेगा? हमारी बिनती है कि यह खून-खराबी न होने पाये, ऐसा उपाय करें।—बीरू ने हाथ जोड़कर प्रार्थना की।

देवशरण काका, सुनते हैं, उनलोगों के नायक हैं।—श्यामू ने बीरू की प्रार्थना में योग देते हुए कहा।

लच्छू बाबा हँसते हुए बोले—अच्छा, मैं देवशरण को बुलाकर समझा देता हूँ। ऐसा न होगा।

बीरू, श्यामू और नन्दू को तो लच्छू बाबा की बातों पर विश्वास हो गया; पर सीरी महाराज को उनकी हँसी-रूपी फूल के नीचे विषधर साँप की आशंका मालूम हुई।

काका, खैर किसी तरह विपत्ति टल गयी।—रास्ते में जाते-जाते श्यामू ने आश्वस्त होकर कहा।

नहीं श्यामू, तुम अभी बच्चे हो। बातें नहीं समझते, बखेड़ा टला नहीं है। मुझे तैयार रहना पड़ेगा। यह सुनकर तीनों फिर डर गये।

*

रात के करीब बारह बजे होंगे। मुसलमान-टोली सशंकित जग रही है। बच्चों को अपने हृदय से चिपकाये महिलाएँ बड़ी-बड़ी भयभीत आँखों से अंधकार की ओर आनेवाली विपत्ति को देख रही हैं। घोर अन्धकार और निस्तब्ध रात्रि में जरा-सी किसी आवाज से वे चौंक पड़ती हैं। सभी बूढ़े-जवान चौकस अपने-अपने द्वार पर बैठे आनेवाली विपत्ति का सामना करने के लिए चिन्तित हैं। दूर से कुत्ते और सियार के भूँकने की आवाज से भी सारी मुसलमान-टोली में एक खलबली-सी मच जाती है। प्राण आकण्ठ हो आते हैं। जैसे-जैसे रात बीतती जाती है उनलोगों का डर भी कम होता जाता है; पर शंका कम न होती। साढ़े बारह बजेवाली पैसेन्जर गाड़ी की धमस और रोशनी ने फिर एक बार मुसलमान-टोली को आत्म-रक्षा के लिए सजग कर दिया। मुसलमान-टोली के हृदय की धड़कन भाथी-जैसी जोर-जोर से होने लगी। बच्चे काँपते-काँपते जाग उठे। स्त्रियाँ, जो बच्चों से लिपटी ऊँघ रही थीं, अपनेको सँभालने लगीं—क्या होनेवाला है, कयामत आ गयीं क्या ? पर गाड़ी की स्पष्ट आवाज जान लेने पर सबोंकी जान में जान आयी। सभी सोचने-समझने लगे—आखिर हमलोग भी अपनी बुद्धि एकदम खो बैठे हैं। इधर पूरब की ओर से वे लोग कहाँ से आयेंगे ?

नहीं, ऐसा न कहो। वज्रपात कब किधर से हो

जाय, कोई अन्दाज नहीं कर सकता।—एक बूढ़े ने कहा।

रहमत के चाचा ने कहा—सीरी महाराज की कृपा है, जो हम भाइयों की जान-माल की रक्षा हो पायी। श्यामू! उसके इशारे पर सीरी महाराज नाचते हैं। उसने ही उनसे कहा—काका, कोई उपाय होना चाहिये, ताकि कोई गड़बड़ी न होने पाये……।

'महावीर स्वामी की जय' 'महावीर स्वामी की जय' की घोर हृदय दहला देनेवाली आवाज ने, जो पूरब की ओर से आ रही थी, रहमत के चाचा की बोलती बन्द कर दी।

सारी मुसलमान-टोली की भयभीत आँखें पूरब की ओर चली गयीं। एक बड़ा-सा प्रकाश दिखाई पड़ा, जो उनके जीवन पर अन्धकार का पर्दा डालने तेजी से उनकी टोली की ओर बढ़ता आ रहा था। सबोंकी आँखों के आगे अँधियाला छा गया। पैर ढीले पड़ने लगे, हिम्मत बेकाबू होने लगी। स्त्रियाँ चीखने लगीं, बच्चों की आँखों से नींद भाग गयी। अपनी माताओं को वे आँखें फाड़-फाड़कर देखने लगे। मालूम होता था उनकी आँखें बाहर निकल आयेंगी।

एक बूढ़े ने कहा—सँभलो! यह समय हिम्मतपस्त होने का नहीं। एक बार तो हमें अपने घर की इज्जत और बच्चों

*
की रक्षा के लिए जान लड़ा देनी पड़ेगी। मैंने कहा था न, सीरी भी हिन्दू है! वह धोखा दे गया न! अच्छा, अल्लाह-हो-अकबर।

सारी मुसलिम-टोली 'अल्लाह-हो-अकबर' की भयभीत आवाज से गूँज उठी और टोली के पूरब ओर नौजवान आत्म-रक्षा के लिए बढ़ गये।

'महावीर स्वामी की जय' की आवाज पचासों मशाल के प्रकाश के साथ पच्छिम की ओर बढ़ती आ रही थी। पूरब की ओर बढ़ती हुई मुसलमान-टोली की आत्म-रक्षा की टुकड़ी ने उस प्रकाश की रोशनी में देखा—मुसलमान-टोली से काफी दूर एक बड़ी तथा कुछ छोटी छायामूर्त्तियाँ प्रकाश की ओर बढ़ती जा रही हैं। वे लोग कुछ समझ नहीं पा रहे थे। हिम्मत करके रहमत आगे बढ़ा, तो देखा—सीरी महाराज, श्यामू, नन्दू, बीरू आदि हैं।

प्रकाश निकट आ गया था। सीरी महाराज आगे बढ़ गये और मशालवाले को एक सेनापति की तरह आज्ञा देते हुए कहा —रुको! आवाज सुनकर सभी एक साथ स्तब्ध हो गये। पर, देवशरण ने आगे बढ़कर कहा—तुम हिन्दू नहीं हो? इस तरह क्यों रोक रहे हो? तुम्हारी बात मैं लच्छू बाबा से सुन चुका हूँ। पर किसीको तुमसे सहानुभूति नहीं। इसे बच्चों के खेल में शामिल न करो।

देखो देवशरण, पहले मैं आदमी हूँ, तब कुछ। इन मुसलमानों में तुम अपनेसे क्या भिन्नता पाते हो ? इनमें भी खून-माँस है, जो हममें है।—सीरी महाराज ने कहा।

इन दलीलों से मुझे मतलब नहीं। हमारे रास्ते का काँटा मत बनो। हमें जाने दो·······।

'अल्लाह-ओ-अकबर' तथा 'महावीर स्वामी की जय' से सारा गाँव काँप उठा। मुसलमान-टोली त्राहि-त्राहि कर उठी। स्त्रियों की चीख और बच्चों की 'मा-मा' की आवाज भी इन शैतानों के पत्थर-हृदय को न पिघला सकी। पर सीरी महाराज के सामने उनका एक न चला। कितने घायल होकर भागे और कितने भयंकरता देखकर जुलूस के पीछे से ही भाग खड़े हुए। मुसलमान-टोली के पूरबी छोर पर की एक झोपड़ी में आग लगाकर वे धर्म के ठेकेदार अपनी विजय की थोथी डफली बजाते पीठ दिखाकर भाग खड़े हुए।

सबेरा हो गया था। सीरी महाराज की बहादुरी की बात घर-घर दोहरायी जा रहा थी। मुसलमानों के घर तो वे तीनों पीर का पद पा रहे थे।

*

उस घटना के करीब एक सप्ताह बाद सीरी महाराज खूब तड़के श्यामू के घर जा पहुँचे। श्यामू अभी सोकर भी नहीं उठा था। जग्गू से खबर पाकर वह जल्दी से उठ आया और सीरी काका को सत्कारपूर्वक बैठकखाने में बैठाकर उनसे आज्ञा लेकर अपने नित्यकर्म से छुट्टी पाने चला गया।

आध घंटे के बाद आते ही बोला—काका, कैसे रास्ता इस ओर भूल गये ?

सोचा, देखें बाबू लोग अब क्या कर रहे हैं ; क्या कोई नयी लगन लगी है या काका को यों ही भूल बैठे हैं ?

नहीं काका, उस दिन की घटना के बाद मुझमें कुछ शिथिलता-सी आ गयी है। नन्दू, बीरू आदि की हालत भी कुछ ऐसी ही है।

शिथिलता क्यों आयी ? कुछ निश्चिन्त हो गये हो, क्यों ? तुमलोगों की तो विजय हुई है—पशुता पर मनुष्यत्व ने विजय पायी है। तुमलोगों में तो नया उत्साह-नया जोश होना चाहिये।

हाँ, विजय तो हुई जरूर ; पर हिम्मत पस्त-सी जान पड़ती है। काका, उस रात अगर आप न होते तो हमलोगों के करते क्या बनता ? आदमी ऐसा निर्दय होता है, यह इसके पहले मैंने कभी नहीं सोचा था। ऐसे नर-पिशाचों के बीच मनुष्य कैसे जी सकता है—दुनिया कैसे चल रही है, यह एक महान् आश्चर्य है ! आपके जैसे साहसी और

दयावाले कितने आदमी संसार में हैं काका, जो आदमी की रक्षा करते रहते हैं ?

श्यामू की ये बातें सुनकर सीरी महाराज की आँखें भर आयीं। वे अनुभव करने लगे—कहाँ था मुझमें साहस और कहाँ था मुझमें दया का भाव ? यह तो इन बच्चों के संसर्ग का ही प्रभाव है, जो मैं ऐसा हो पाया हूँ। वे प्रकाश्य रूप से बोले—बाबू मेरे, तुम नहीं जानते; पर सारा समाज जानता है कि मैं कैसा दुष्ट, निर्दयी, दुराचारी था। यह तो तुमलोगोंका प्रसाद है, जो मुझे तुम ऐसा पा रहे हो।

ऐसा कहकर मुझे लज्जित न करें, काका !

अरे नहीं श्यामू, मैं अपने हृदय की बात कह रहा हूँ। बाल-मण्डली में—तुमलोगों में—वह शक्ति है, जो निकम्मे को कमासुत, डरपोक को महान, साहसी और कमकोढ़ी को दुनिया का नामी परिश्रमी बना दे सकती है। तुम्हारी बाल-मण्डली ने मेरे जीवन में वह सुधार—संस्कार—ला दिया, जो शायद तीन जनम की कठिन तपस्या से सम्भव न था।

अभी सीरी महाराज अपने हृदय की कौन-कौन-सी बातें कहते ; पर बीच में ही श्यामू के आगे रवि ने 'नवराष्ट्र' दैनिक पत्र की प्रति रखते हुए कहा—देखी है यह खबर ? काका, हमलोगोंका तो पूरा नाम हो गया है। कितने लोग बाल-मण्डली का नाम जान गये होंगे !

*

श्यामू ने उत्सुकता से 'नवराष्ट्र' को उठाकर देखा। 'नवराष्ट्र' का समाचार था—

बाल-मण्डली की अपूर्व ऐक्य निष्ठा

गत मंगलवार को भीमकीता की बाल-मंडली ने हिन्दू-मुस्लिम-एकता के लिए जो प्रयास किया है वह सारे देश के लिए अनुकरणीय है। बाल-मण्डली की जान—वे तीनों— नन्दू, बीरू तथा श्यामू और उनके इशारे पर बच्चे की तरह आज्ञा-पालन करनेवाले सीरी महाराज ने हथेली पर जान रखकर निर्दोष मुसलमानों की जो उन नर-पिचाशों से रक्षा की है, वह देश के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जायगा...।

समाचार पढ़कर श्यामू आनन्द से विह्वल हो उठा। सीरी काका के प्रति श्रद्धा प्रकाशित करने लिए जैसे उसके मुँह में वाणी न रह गयी। उसे लगने लगा--अगर काका हमसे उम्र में छोटे रहते तो गोद में लेकर उन्हें उछाल देता। पर वह लाचार था। अपनी कल्पना में ही मुग्ध होकर गदगद कंठ से बोला—काका, चलिये बीरू और नन्दू को भी यह खबर सुना आयें। क्यों रवि ?

तीनों चुपचाप बीरू के घर जा रहे थे। पूरब की ओर से रहमत बगल में कुछ दबाये सहमता-सा तेजी से पैर बढ़ाता आ रहा था।

क्यों भाई रहमत, इतना सवेरे कैसे इधर आ पहुँचे ?—रवि ने प्रश्न किया।

*

श्यामू की उत्सुकता तो और उग्र हो उठी। घबड़ाया-सा बोला—क्यों भाई, कुशल तो है ? कोई नयी बात तो न हुई ? मुझे तो बराबर डर लगा रहता है।

नहीं-नहीं, घबड़ाने की कोई बात नहीं है। यह अखबार दिखलाने चला आया था। चाचा शहर गये थे। वहाँ से ही 'नदीम' ले आये हैं। कल शाम को ही आता; पर जरा देर हो गयी। इसीलिए अभी सबेरे आया हूँ। रास्ते में चलते-चलते उसने 'नदीम' का जो समाचार पढ़ा, उसका आशय करीब वही था जो 'नवराष्ट्र' में प्रकाशित हुआ था। इसमें विशेष में सम्पादक ने अपनी टिप्पणी में बाल-मंडली की प्रशंसा करते हुए सरकार से देश की ऐसी संस्थाओं की मदद करने की जोरदार अपील की थी।

'नदीम' की टिप्पणी से सभी प्रसन्न थे—गद्गद थे। बीरू के घर जाते-जाते रास्ते में नन्दू भी आ मिला। दोनों अखबार के समाचार पढ़-सुनकर वह आपे से बाहर हो गया—बारी-बारी से रवि और रहमत को अपने बाहु में समेटकर हिलोरने लगा। उसके आनन्द की सीमा न थी।

बीरू, अरे बीरू, अभी तक सो रहा ? तुम्हारे घर तुम्हें जयमाला पहनाने हमलोग कब से खड़े हैं !—जोर-जोर से पुकारते हुए नन्दू ने हंगामा-सा मचा दिया।

नन्दू की उल्लास-भरी आवाज सुनकर बीरू दौड़ता हुआ आया तो देखा—सीरी काका, श्यामू, रवि और रहमत

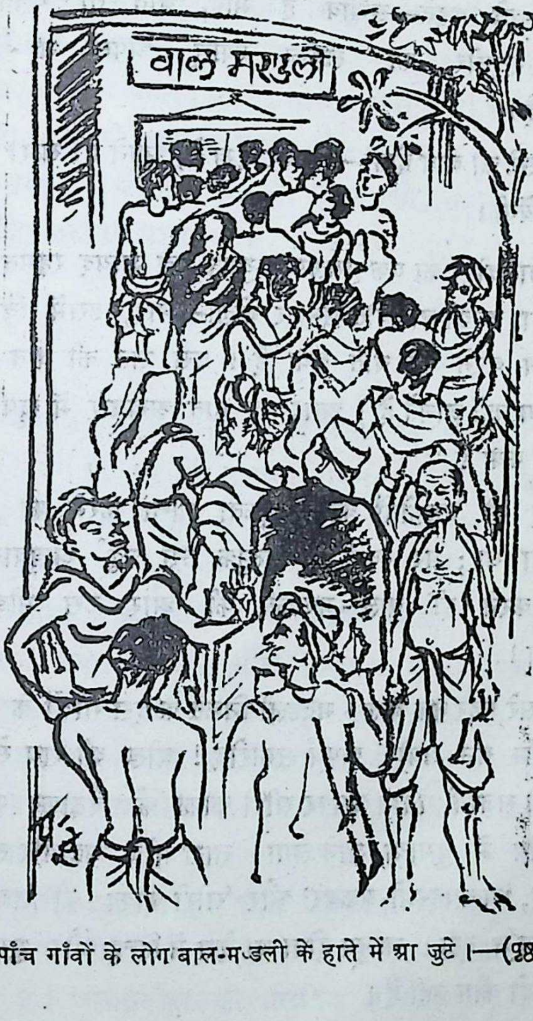
तक इतना सबेरे सभी प्रसन्न मुख उसका आसरा देख रहे हैं। उसकी समझ में कुछ न आया। वह अपनी कल्पना दौड़ाने लगा—रहमत हैं, सीरी काका हैं, क्या बात है? कोई नयी बात हो गयी है क्या ? पर सभी तो प्रसन्न दीख पड़ रहे हैं।

श्यामू भाँप गया कि बीरू का दिमाग काम न कर रहा है। उसे होश में लाते हुए श्यामू ने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा—क्या सोच रहे हो? कोई गड़बड़ी नहीं है, इतना समझ लो। फिर 'नवराष्ट्र' और 'नदीम' के समाचार और टिप्पणी उसे सुनाई गयी। तब कहीं जाकर वह आश्वस्त हुआ।

बीरू की सलाह से दोनों अखबार बाल-मंडली के वाचनालय के बोर्ड (तख्ती) पर लटका दिये गये।

भीमकीता की उस रात की घटना अखबार में छपी है, और बाल-मण्डली का उसमें खास तरह से उल्लेख है, यह खबर गाँव-भर में फैल गयी। सबोंमें अपनी आँखों से उस अखबार को देखने की लालसा जाग पड़ी। सभी बच्चे-बूढ़े बाल-मण्डली की ओर दौड़ पड़े। दोपहर होते-होते तो चार-पाँच गाँवों के लोग बाल-मण्डली के हाते में आ जुटे।

कोई कहता—बात गलत है।



चार-पांच गाँवों के लोग बाल-मण्डली के हाते में आ जुटे ।—(पृष्ठ ७०)

बड़े-बूढ़े कहते—सम्भव है भाई, बात तो गलत है नहीं। रघुवीर का लड़का श्यामू अपनी मा-जैसा दयालु है।

तीसरे की बात होती—चलकर देख लें, अपने ही सारी बातें खुल जायेंगी।

जमालदीपुर का एक मुसलमान युवक, जो शायद रहमत का दोस्त था, उनकी बातचीत सुनकर बोला—भाई, इसमें विश्वास करने न करने की बात क्या है? उस रात की बात क्या आपलोग नहीं जानते हैं? अगर वह बात अखबार में छपी तो आश्चर्य क्या?

वह तो उनलोगों की उत्सुकता शान्त करने की चेष्टा कर रहा था; पर स्वयं भी उत्सुक उस उर्दू अखबार के दर्शन करने ही बाल-मण्डली की ओर उस भीड़ के साथ था।

तीसरे पहर तक बाल-मण्डली निकट के दस गाँवों के लिए तीर्थ-भूमि बन गयी। अपूर्व समारोह! बोरू की राय से एक बैलगाड़ी सजायी गयी। उसपर सीरी काका को बैठाकर जुलूस सारे गाँव में घुमाया जाने लगा। सारा गाँव 'महावीर स्वामी की जय', 'अल्लाह-ओ-अकबर' और 'सीरी काका की जय' के नारे से गूँज उठा। मालूम होता था देश में हिन्दू और मुसलिम कहकर दो कौम नहीं हैं।

रहमत के मित्र के आग्रह से जुलूस जमालदीपुर तक गया। वहाँ सारे जुलूस की जो खातिर हुई, वह शायद बड़े से बड़े नेता को भी नसीब न हुई होगी। सभी लोगों को मसजिद में बिठाकर, सीरी महाराज, श्यामू, बीरू और नन्दू की देवताओं की तरह पूजा की गयी। औरतों की भीड़ तो उन सबोंको देखने के लिए टूटी-सी पड़ती थी।

जमालदीपुर से लौटते-लौटते रात चढ़ चुकी थी। सभी थक गये थे, पर थे प्रसन्न। लेकिन, सीरी काका के चेहरे से साफ प्रगट हो रहा था कि वे किसी चिन्ता में पड़ गये हैं।

श्यामू, बीरू और नन्दू सीरी काका को घर तक पहुँचाने गये। रास्तेभर सीरी काका के मुँह से एक बात भी न निकली। यह भी उनसे कहते न बना कि रात में तुमलोग कहाँ जाओगे, मैं चला जाऊँगा। वे लोग भी आश्चर्यचकित थे कि इस समारोह के बीच भी काका को किस विषाद ने आ घेरा।

सौसी हमलोग हैं। आज हमलोगों ने जुलूस निकाला था। उस रोज की घटना का समाचार अखबार में छप गया है। जमालदीपुर की मसजिद में हमलोगों का बड़ा

सत्कार हुआ। मालूम होता था, हमलोग उनके देवता हैं। औरतों ने सीरनी तक चढ़ायी। हमलोग संकोच से मरे जा रहे थे। और, काका तो सचमुच पत्थर के देवता हो गये थे। कुछ बोलते ही नहीं थे।—एक साँस में कहकर श्यामू हँसने लगा।

बासन्ती सारी बातें ध्यान से सुन रही थी और एकटक सीरी महाराज के अवसाद-भरे चेहरे को देख रही थी। उसकी समझ में भी बात नहीं आ रही थी कि आज वे ऐसे क्यों दिखाई पड़ रहे हैं। पर श्यामू की हँसी ने उसमें मजाक की वृत्ति जगा दी। बोली—तुम्हारे काका तो सब दिन से बुत हैं—पत्थर के देवता, जो दे दो उसी में खुश। एक-सा चेहरा लिये रहते हैं।

तुमलोग इतनी रात यहाँ ही हो ?—सीरी महाराज ने अपनी तन्द्रा तोड़ते हुए कहा।

फिर कहने लगे—मौसी नाम की ही हो, या इनलोगों को कुछ खाने-पीने को भी दोगी ? सभी थक गये हैं। मेरी खातिर में ये लोग सब कुछ भूल बैठे हैं।

ऐसा क्यों कहते हैं काका ?—बीरू ने उनके विषाद के कारण ही टोह लेने की कोशिश की।

क्यों, क्या बीरू ? तुमलोगों ने तो आज मुझे एक अच्छा तमाशा बना दिया। मैं इसी लायक हूँ, यही शायद तुमलोग कहोगे। पर मैं योग्य हूँ अथवा अयोग्य, मैं अपने-

को लोगों का देवता नहीं बनाना चाहता। तुमलोग जो चाहो हमसे करा लो; पर मुझे देवता न बनाओ, नेता न बनाओ।— सीरी महाराज ने कहा।

जरा संकोच-भरे शब्दों में नम्र होकर श्यामू ने कहा—तो काका शायद इसीलिए उदास हैं? हमलोग दोषी हैं। काका, क्षमा करें।

देखो, तुमलोग एक सीख मुझसे ले रखो। सब कुछ लोगों के लिए करो, जहाँ तक बन पड़े; पर कभी जन-साधारण का देवता मत बनो—बनने की कोशिश न करो, उनके आग्रह पर भी नहीं। मैंने यह शिक्षा उस दिन पायी थी, जिस दिन ओपी बाबू की कोठी में किसी बुरी नीयत से खराब संगत में गया था। अभी भी वह काला पत्थर हमारे सामने दिव्य सन्देश लिये खड़ा है। किसी नवयुवक की मृत्यु हो गयी थी—कहीं बीहड़ देहात में, गरीबों की टोली में, महामारी के समय काम करते। उसका अन्तिम संस्कार भी ठीक तरह शायद न हो पाया था। शायद ओपी बाबू के पिता उस नवयुवक के मामा थे। उन्होंने उसकी दिव्य स्मृति में उस काले पत्थर पर—

बसन्त जन-सेवक था।

अपने प्रति वह किसीसे पूजा नहीं चाहता था।

असमय में जन-सेवा में उसने अपने प्राण विसर्जन किये।

अमिट पंक्तियाँ अंकित कराकर अपनी कोठी के सामने उसे गड़वा दिया है। "अपने प्रति वह किसी से पूजा नहीं चाहता था।" यह पंक्ति मेरा मूलमंत्र है। बस अब कुछ न कहूँगा। देर हो रही है। चलो तुमलोगों को पहुँचा आऊँ। यह कहते हुए सीरी महाराज उठ खड़े हुए।

श्यामू, वीरू और नन्दू चुपचाप उनके पीछे आँगन से बाहर हो गये। किसीके मुँह में कोई बात न थी।

साहस करके श्यामू ने पूछा—क्या हमलोग ओपी बाबू की कोठी देखने नहीं जा सकते हैं? हमलोग भी सुनते आ रहे हैं कि दिन में भी उस कोठी के बगीचे में एकदम अन्धकार रहता है। कोठी भी बड़ी विचित्र है और बहुत बड़ी है।

अब तक सीरी महाराज अपनेको कुछ सम्भाल चुके थे—उनका मन हल्का मालूम हो रहा था। प्यार से कहा—क्यों नहीं, जब चाहो तब चल सकते हो। तुमलोगों को ऐसे-ऐसे स्थान तो देखने चाहिये।

तीनों को गाँव के बीच छोड़कर सीरी महाराज घर लौट आये। वे तो अब निश्चिन्त मालूम हो रहे थे; पर वे तीनों विचार-मग्न तरह-तरह की चिन्ताएँ दिमाग में लिये अपने-अपने घर गये।

*

निश्चित प्रोग्राम के अनुसार आज रविवार को बाल-मण्डली के प्रमुख सदस्यों की टोली ओपी बाबू की कोठी देखने की तैयारी में है। दोपहर वहाँ ही बिताया जायेगा; इसीलिए खाने-पीने की भी सामग्री कुछ साथ में रख ली गयी है। सभी—श्यामू, बीरू, नन्दू, रवि, गोपेश, रहमत आदि जुट गये हैं; सीरी काका का आसरा देखा जा रहा है। वे ही तो आज इनके इस अभियान के नायक थे। उनकी उस रात की सीख ही तो इन्हें—बाल-मण्डलीवालों को—उस काले पत्थर की दिव्य लकीरों की ओर खींचे लिये जा रही है। श्यामू के मन में बार-बार वही वाक्य खिच जाता है—किसीका देवता बनने की कोशिश मत करो। बीरू और नन्दू पर भी कुछ प्रभाव था; पर वे अभी एक तरह से यह भूल बैठे थे। वे अन्य लड़कों के साथ ओपी बाबू की कोठी के बगीचे की भयंकरता—अन्धकार-की ही चर्चा कर रहे थे।

क्या ऐसा अन्धकार है कि दिन में भी रोशनी की जरूरत पड़ेगी?—एक लड़के ने आश्चर्य से पूछा।

रह गये तुम भी सब दिनों के लिए बुद्धू ही।—रवि ने मजाक करते हुए कहा।

अच्छा सरकार, आप ही बड़े बुद्धिमान बने हैं। जब निकल आयेगा कोई साँप-वाँप उस जंगल में, सबसे पहले तो आप

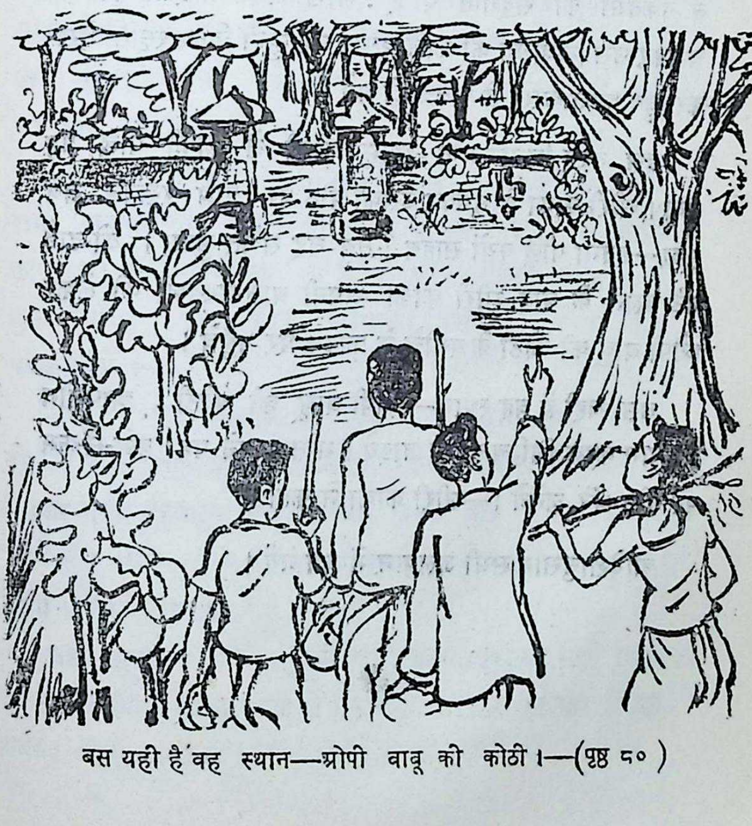
ही की नानी मर जायेगी।—गोपेश ने गम्भीर होकर कहा।

वे लोग यों ही हँसी-मजाक की बातें कर रहे थे कि सीरी महाराज ने आते ही कहा—भाई, कुछ देर हो गयी। अच्छा, अब हमलोग चलें।

× × ×

ओपी बाबू की कोठी इस गाँव से उत्तर-पूरब की ओर करीब चार-पाँच मील की दूरी पर पड़ती है। कभी उनकी कोठी की अगल-बगल में विदेशी निलहों की कोठियाँ थीं, जहाँ नील तैयार होता था। इसीलिए शहर से वहाँ आने-जाने की सड़क थी। यद्यपि वह सड़क अब भी पश्चिम-पूरब अपने अतीत का गौरव निःस्वार्थ फैलाये पड़ी है; पर उसका उपयोग अब वह न रह गया है। सड़क पर घासें जम गयी हैं। हाँ, सड़क के बीच से पगडण्डी बन गयी है, जिससे होकर पुण्यार्थी स्त्री-पुरुष गंगा-स्नान को जाते हैं, या चरवाहों के लड़कों के काम आती है। भीमकीता से आध मील चलने पर उसकी दाहिनी बाँह पकड़कर बाल-मण्डली उसकी देह पर सवार हो रही थी। श्यामू सबसे पीछे था। हठात् उसकी स्मृति जाग उठी—वह भादों की रात, जिस रात जग्गू उसे गोद में लिये लालटेन की रोशनी की सहायता से इस सड़क की दाहिनी बाँह पकड़ने के लिए पानी भरे नाले को लाँघने की कोशिश कर रहा था। याद कभी धुँधली हो उठती और कभी

प्रकाशमान होकर श्यामू के सामने नाचने लगती। अपनी स्मृति के छोर को ठीक तरह पकड़ने की कोशिश में वह रुककर खड़ा हो गया। एक बार उसने अपने गाँव की ओर देखा और फिर ठीक पूरब की ओर, और फिर उत्तर, और फिर टोली के पीछे हो लिया। सर नीचा



बस यही है वह स्थान—ओपी बाबू की कोठी।—(पृष्ठ ८०)

किये विह्वल-सा वह सोचता चला—इसी रास्ते से तो मेरी मा की अरथी गयी थी। मेरे बाबूजी कितना रोये थे! मैं रोया था या नहीं? शायद अब मा मरती तो मैं रोता! मेरी दादी, मेरे दादा, गाँव के जितने लोग मरे होंगे, सबोंकी अरथी तो इसी रास्ते गयी होगी! यह सड़क भी धन्य है! इसकी धूल ने कितनों को सद्गति दी है! सीरी काका भी इसी रास्ते पर चलकर उस पुण्यात्मा की काले पत्थर पर खुदी दिव्य स्मृति देखकर खुद अन्तःकरण से पवित्र हो गये हैं।

इस तरह विचार-मग्न श्यामू टोली से क़ाफी पीछे पड़ गया। सीरी काका ने घूमकर उसकी पीठ पर हाथ रखकर जब पूछा—इतना पीछे क्यों साहब? तब वह सचेत हुआ। दो-ढाई घंटे चलने के बाद सीरी काका अपनी बाल-मण्डली को लेकर ओपी बाबू की कोठी के बगीचे के फाटक पर पहुँचे।

बस, यही है वह स्थान—ओपी बाबू की कोठी! आपलोग जलपान करके निश्चिन्त हो जाइये। भीतर जाने पर कम-से-कम पूरे तीन घंटे लगेंगे।—सीरी काका ने कहा।

आदेशानुसार सभी जलपान में लग गये।

*

आगे-आगे सीरी काका, उनके पीछे श्यामू, बीरू, नन्दू तथा अन्य लड़के। सबोंकी आँखों में विस्मयमिश्रित भय साफ झलक रहा है। फिर भी वे आगे बढ़ते जा रहे हैं। किसीके मुँह में कोई बात नहीं। वे अनुभव कर रहे हैं कि इसके पहले शायद वहाँ कोई न आया हो। कहीं कोई मनुष्य के आगमन का चिह्न नहीं दिखाई पड़ रहा है। बीच दोपहरिया में भी सारा बगीचा अन्धकारमय है। दस डेग भी लोग नहीं गये होंगे कि उस अन्धकार में पूरब की ओर से फर-फर करता हुआ एक पक्षी पच्छिम के अन्धकार में विलीन हो गया। सीरी महाराज को छोड़ सभी अकचकाकर ऊपर की ओर ताकने लगे। पर सीरी काका को निर्विकार रूप से आगे की झाड़ियाँ साफ करते हुए आगे बढ़ते देख सँभलकर सबोंने उनके डेग पकड़ लिये।

ठक्-ठक् की आवाज से फिर एक बार सभी अवाक् हो गये और अगल-बगल झाँकने लगे। इस बार सीरी काका ने मुड़कर देखा तो भाँप गये कि सभी लड़के कुछ चकित मालूम पड़ते हैं। कहा—अरे, यह कठफोड़वा है, कोई पेड़ खोद रहा होगा। तुम लोग डर गये क्या?

नहीं काका······।—बीरू ने अभी कहना पूरा भी नहीं किया था कि टोली की बायीं बगल से एक बड़ा साँप सरसराता निकल गया। सभी अवसन्न!

काका···श्यामू···।—एक लड़के ने कहा।

अब तक श्यामू सीरी काका की निर्भीकता देखकर काफी साहस बटोर चुका था। कहा—अरे, भय काहे का? वह देखो, वह तो हमलोगों के डर से अपनी जान बचाकर खुद निकल भागा।

हाँ, भाई, इस तरह से डरने से तो काम नहीं चलेगा। अपनी छाती को जरा मजबूत करो।—बीरू ने कहा।

क्यों काका, सारा बगीचा ऐसा ही अंधियाला है? पेड़ इतने घने हैं कि सूर्य की किरण की छटक तक नीचे नहीं उतर पा रही है।—रवि ने कहा।

सीरी महाराज ध्यान-मग्न-से आगे-आगे चल रहे थे। रवि के प्रश्न से चौंककर बोले—हाँ, प्रकाश अब बगीचे के उस छोर पर ही मिलेगा।

टोली उस अन्धकार में झींगुर की सुरीली आवाज, जो बीच-बीच में उनलोगों के पैरों की आहट से चुप-सी हो जाती थी, के बीच आगे बढ़ती जा रही है। कभी किसी चिड़िया के डैनों की फर-फर, कभी नीचे किसी रेंगनेंवाले की सरसराहट, कभी गिलहरी की दौड़ से भी और किसी सियार या फर्कसियारी के भागने से झाड़ियों के हठात् हिल जाने से सभी रुक जाते—साँस रोक-से लेते। पर, सीरी काका को निर्विकार आगे बढ़ते देख साहस जाग उठता

और वे सीरी काका की बनायी राह पर तेजी से उन तक पहुँच जाते।

उत्तर की ओर अब कुछ प्रकाश-सा दीख पड़ने लगा था। सीरी काका एक क्यारी, जो शायद वर्षों से साफ नहीं की गयी थी, के पास एक झाड़ी के सामने जाकर खड़े हो गये। सभी लड़के भी उनके पीछे खड़े हो गये।

यों खड़ा देखकर बीरू ने प्रश्न किया—क्यों काका, खड़े हो गये ?



यह वही कोठी है जहाँ दिन-रात चैन···। (पृष्ठ ८५)

देखो, यह झाड़ी किस स्नेह और श्रद्धा से इस काले पर दिव्य स्मृति (पत्थर) को घेरे खड़ी है, यही……।

सीरी महाराज ने श्रद्धांजलि अभी पूरी भी नहीं की थी कि सबोंकी नजर उस काले पत्थर पर पड़ी।

सबोंने एक स्वर में श्रद्धा से सराबोर होकर कहा—यही वह तीर्थ……?

श्यामू तो एकदम गद्‌गद हो रहा था। उसके सामने बसन्त साकार खड़ा हो गया और उसने देखा—सीरी काका उसके सामने साष्टांग पड़े हैं। अपने शरीर का उन्हें सुध-बुध नहीं है। फिर उसके सामने सीरी काका के साहचर्य की एक-एक घटना थिरकने लगी। उनके साहस, उनकी सहृदयता, उनका धैर्य—उनके सारे गुणों की प्रशंसा उसकी नस-नस से फूट पड़ने लगी। अभी शायद वह कितनी देर कल्पना में डूबता-उतराता रहता, पर सीरो काका के मुँह से निकले शब्द—चलो अब हमलोग कोठी के भीतर चलें—से वह सँभलकर सजग हो गया।

नन्दू अभी भी उस झाड़ी पर एक टक लगाये खड़ा था। शायद अपनी बुद्धि की आँखों से उससे और कुछ निकालने की कोशिश कर रहा था। उसे हिलाते हुए बीरू ने कहा—चलो, अभी बहुत-कुछ देखना है। इसपर फिर कभी विचार कर लेना।

*

सीरी महाराज कोठी की बाहरी सीढ़ी पर पैर रख चुके थे। घूमकर देखा—बीरू और नन्दू काफी पीछे हैं। उन्होंने कहा—देखा, यही वह कोठी है, जहाँ दिन-रात चैन की बंशी बजती थी—कितने बड़े-बड़े लोग, हाकिम-हुक्काम यहाँ पहुँचने में अपना गौरव समझते थे। ओपी बाबू के पिता ने यह जमीन खरीदी थी; पर यह कीर्त्ति—कोठी और बगीचा— ओपी बाबू के शौक और सूझ का फल है। देश - विदेश से लाकर पेड़, फल-फूल यहाँ कितना खर्च कर लगवाये गये थे। सभी ऋतु के फल - फूल का सदा आनन्द ओपी बाबू को यहाँ बैठे कोठी में बिना प्रयास उपलब्ध था।

वे लोग पहले किता में पहुँच चुके थे।

यह है पहला किता। दस किते की यह कोठी है। देखो, एक ही किता का आँगन कितना बड़ा है।...

आहट पाकर चमगादड़ फड़ - फड़कर इधर - उधर उड़ने लगे। एक कमरे में निश्चिन्त बैठी एक सियारिन अपने बच्चों के साथ भागने को दुम दबाकर खड़ी हो गयी।

समय का फेर है। जहाँ एक दिन बड़े - बड़े हाकिमों की पहुँच मुश्किल थी, वहाँ चमगादड़, गीदड़—सियार आदि निश्चिन्त अपना अड्डा बनाये हुए हैं ...... ।— कहते -कहते सीरी महाराज ने एक लम्बी साँस खींच ली।

फिर कहने लगे—हाँ, देखो कमरे की दीवारों का रंग अभी भी कैसा चमक रहा है, न जाने कहाँ से ओपी बाबू ने रंगसाज और रंग मँगाया था !

वे लोग दूसरे किता को पार करके तीसरे किता में जा पहुँचे थे।

यह था ओपी बाबू का अपना बैठका। पश्चिमवाला बड़ा कमरा दिखलाते हुए सीरी महाराज ने कहा—कहते हैं इस हॉल के संग्रह की वस्तुएँ शायद अभी भी बड़े-बड़े शहरों के अजायबघरों में देखने को नहीं मिल सकतीं। देश-देश की मूर्त्तियाँ, दुनिया की नदियों के सीप-मूँगे, यहाँ तक कि मिस्र के पिरामिड की बगल का बालू तक भी यहाँ संग्रहीत था। छत की ओर देखो, अभी भी ये चित्र मालूम होते हैं, जैसे कल के बने हों।

मन्त्र-मुग्ध-से सभी सीरी महाराज की बातें सुन रहे थे। हठात् नन्दू की नजर उस हॉल के एक कोने की ओर चली गयी। उसने देखा—शायद कोई बड़ा-सा सुराख है। आगे बढ़कर देखा—सचमुच एक सुराख !

काका, यह सुराख कैसा है ?—नन्दू ने उत्सुकता से पूछा।

यह तो अभी हम तुम्हें बताने ही वाले थे। यह है ओपी बाबू का वह तहखाना, जहाँ कोठी का सारा

खजाना रखा जाता था। हीरे, जवाहर, पन्ना आदि जो भिन्न-भिन्न तरह के मूल्यवान पत्थर इसमें जमाकर उन्होंने रखे थे, उन्हें शायद अच्छे-अच्छे जौहरियों को पहचानने में भी दिक्कत होती थी। अब तो इसमें उन मूल्यवान वस्तुओं की जगह विषैले साँपों तथा अन्य जानवरों ने अपना निवास बना लिया है। एक बार मुझे इसमें उतरने का मौका मिला था। एक भारी भूल-भुलैया है। वहाँ जाकर निकलना मुश्किल हो जायगा।

चौथे किता में कोठी का पुस्तकालय था। तमाम दीवारों में आलमारियों की जगहें बनी अभी भी दिखाई दे रही थीं।

पाँचवें किता में रसोई-घर, गोसलखाना आदि के होने के चिह्न अभी भी दिखाई दे रहे थे।

रसोई-घर की ओर इशारा करके सीरी काका ने बताया —यही वह स्थान है, जहाँ दो-दो मन की एक-एक समूची मछली ओपी बाबू अपनी देखरेख में पर्व-त्योहारों या यज्ञ-याजन में मेहमानों के लिए तैयार कराते थे। यहाँ बने पुलाव की महक से सारी कोठी गमक उठती थी।

छठा किता परिवार के लोगों के लिए था। सबोंके लिए अलग दो-दो कमरे, पाखाना, पानी आदि का प्रबन्ध था, जिनके शेष चिह्न सीरी महाराज दिखाते

जा रहे थे। कोई कमरा उनके भानजे का था, तो कोई भानजी का, कोई दामाद के भाई का। सोरी महाराज ने बताया कि ओपो बाबू इतने उदार और सहृदय थे कि दूर-दूर के नातेदारों को भी अपने यहाँ बटोरे रहते थे।

सातवाँ किता साधु-संतों के निवास के लिए और आठवाँ समय-समय पर भजन और थियेटर-यात्रा के समारोह के लिए बनाया गया था। इस किता में जहाँ थियेटर होता था, जहाँ गीत-वाद्य का रास-रंग जमा रहता था, अपने अतीत की कहानी बताने के लिए एक बड़ा चबूतरा गूँगा फैला पड़ा था। जहाँ पहले तबले की ठनक और सितार की सुरीली तान गूँजती थी, वहाँ रात में ठण्ढ से डरकर सियार हुआँ-हुआँ से मनुष्य के जीवन की चंचल घड़ी के होने का सन्देश आह भरकर कहते हैं।

नवाँ किता नौकरों की कोठरियों की कतार से भरा था; पर सारे कमरे प्रशस्त—बड़े-बड़े। नौकर अपने परिवार के साथ वहाँ रहते थे। सीरी काका ने बताया कि जैसा भोजन ओपी बाबू स्वयं करते थे वैसे ही भोजन का इन्तजाम नौकरों के लिए उनके यहाँ था। किसी का भोजन बिना घी-दूध का नहीं होता था।

दसवाँ किता में गोशाला थी। दूध की धारा काठी

में बहती थी। हर गोपाष्टमी के अवसर पर गायों की धूम-धाम से पूजा होती थी।

यह देखो गोशाला। यहाँ हरियाना की गायें और उधर देशज गायें रखी जाती थीं। वह कोने में जो बड़े-बड़े-से हौज का चिह्न देख रहे हो, वहाँ गाय-भैंसें नहलायी जाती थीं।

बीरू ने कहा—काका, ओपी बाबू ने तो स्वर्ग बसा रखा था।

हाँ, भाई। स्वर्ग ही नहीं बसाया था, वे सचमुच एक देवता थे। किसीको कभी जीवन में निराश नहीं किया! क्रोध तो वे शायद जानते ही नहीं थे। समूचे प्रान्त, यों कहो देशभर के लोगों से उनका सम्पर्क था। उनके चलते कितने विद्वान् हो गये, कितनों ने अपने को सम्पत्तिशाली बना लिया…।

श्यामू ने बीच में टोका—क्या बसंतजी भी यहाँ ही रहते थे, ओपी बाबू के साथ ही?

सीरी काका ने उत्तर दिया—कहते हैं, बचपन में वे अपने मामा के घर रहते थे, ओपी बाबू का साहचर्य मिला था, पर यह कोठी उन्होंने कहाँ देखी होगी!

अच्छा, अब चलना चाहिये। शाम हो जाने पर बड़ी कठिनाई होगी।—सीरी महाराज ने कहा।

जिस दिन से श्यामू ओपी बाबू की कोठी देखकर आया था, उस दिन से उसमें अजीब परिवर्तन आ गया था। पहले जब-तब, मौके-कुमौके वह जग्गू पर किसी काम की ढिलाई के कारण क्रोधित हो उठता था। अब गुस्सा होने की बात तो दूर थी, जग्गू के खान-पान पर भी वह विशेष ध्यान रखने लग गया था। रात में जग्गू जब तक खा नहीं लेता, तब तक शयमू चौके से हटता न था। श्यामू के आग्रह से जग्गू के भोजन में घी-दूध की मात्रा बढ़ गयी थी। उसके पहनावे पर भी श्यामू का विशेष ख्याल हो गया था। अपने पिता से आग्रह कर उसके लिए अपने कपड़े के मुकाबिले उसका कपड़ा भी खरीदने—बनवाने की कोशिश करता। अब जग्गू नहीं, श्यामू के लिए वह जगन्नाथजी हो गया था।

श्यामू में यह परिवर्तन देखकर रघुवीर बाबू परेशान थे; पर अपने इकलौते की बात टालने की सामर्थ्य उनमें न थी।

आखिर एक दिन उन्होंने कहा—श्यामू, नौकर को इतना सिर चढ़ाना ठीक नहीं। उसे तो किसी भी चीज की कमी हम खुद ही नहीं होने देते; पर उसे अपनी श्रेणी में कैसे रखा जाय? आखिर तो ठहरा नौकर ही?

नम्र होकर श्यामू ने कहा—हमलोगों की तरह तो वह भी है।

*

हाँ, सो तो है। पर और घरों के नौकरों को देखो। क्या सौवाँ हिस्सा भी सुविधा उनलोगोंको है जितनी सुविधा और आराम जग्गू को है।

श्यामू थोड़ी देर चुप होकर बोला—और लोग अपनी राह पर चलें और हमलोग अपनी राह पर·········।

नन्दू और बीरू को आते देख—अच्छा जाने दो—कहते-कहते रघुवीर बाबू कमरे से बाहर चले गये।]

आते ही बीरू ने कहा—आज तुम ऐसे उदास क्यों बैठे हो ?

नहीं यों ही।—श्यामू ने कहा।

ओपी बाबू की कोठी का खाका खींच रहे होंगे।—कहकर नन्दू ने कहकहा लगा दिया। बीरू ने भी उसकी हँसी में साथ दिया।

हाँ, जरूर। खाका मैं सचमुच खींच रहा था।—जरा गंभीर होते हुए श्यामू ने कहा।

तुम तो बिगड़ बैठे ! अच्छा, चलो जरा इधर-उधर से घूम आयें।—बीरू और नन्दू ने एक साथ ही कहा।

तीनों जमालदीपुर की ओर आपस में बातें करते जा रहे थे। बीच रास्ते में रहमत से मुलाकात हो गयी। उसने उन तीनों को उधर जाने से रोकते हुए कहा—भाई, जमालदीपुर

न जाओ। मैं तो गाँव के निकट जाकर लौट आया। मैं मामू के यहाँ जा रहा था; पर पता चला कि हमारे खलेरे मामू रहमान के यहाँ कल एक चूहा गिरा है। इससे गाँव-भर में बड़ी खलबली है—सभी बड़े घबड़ाये हुए हैं। रहमान मामू भी घर पर नहीं हैं। उनके लड़के सुहैल का परसों खतना होनेवाला है। उसीका सरंजाम जुटाने वे अपने खेत के गाँव पर गये हुए हैं।

तो क्या हुआ? चलो जरा गाँव में जाकर तो पता लें, बात क्या है।—बीरू ने कहा।

नहीं भाई, मैं तो नहीं जाता। आपलोगोंको भी कहूँगा कि मत जाइये।—रहमान ने जरा भयभीत स्वर में कहा।

नहीं, श्यामू चलो, एक बार देख तो आयें।—बीरू ने कहा और नन्दू का मुँह ताकने लगा।

तो चलो।—नन्दू ने अपना आदेश देते हुए कहा।

रहमत अपने गाँव की ओर और वे तीनों जमालदीपुर की ओर चले गये।

जमालदीपुर में घुसते ही रहमत के मित्र से उसकी मुलाकात हुई। देखा—वह त्रस्त-सा उदास चेहरा लिये है।

श्यामू ने भी उदास शब्दों में पूछा—क्यों भाई, सुनता हूँ रहमान मामू के घर चूहा गिरा है? और समाचार तो ठीक है न?



घर-घर चूहे गिर रहे हैं···। (पृष्ठ ९४)

नहीं भाई, समाचार क्या ठीक होगा! रहमान चाचा के घर तो चूहा कल ही गिरा था, आज भी तीन-चार घरों में चूहे गिरे हैं और आज सबेरे से रहमान चाचा की लड़की फातिमा को जोरों का बुखार हो गया है···।

तो ?—तीनों की आँखों में भयमिश्रित आश्चर्य था।

तो अब क्या करना है! सभी डर गये हैं। आपलोग गाँव के भीतर न जायँ। आपलोग तुरन्त घर लौट जाइये। लोग उपाय

कर रहे हैं। कुछ लोग घर छोड़कर बगीचों में रहने की बात सोच रहे हैं।…अच्छा, आप लोग लौट जाइये।

तीनों भीमकीता लौट गये। रास्ते में किसीके मुँह से कोई बात न निकली।

दूसरे दिन सवेरे सीरी काका को पता चला कि जमालदीपुर में घर-घर चूहे गिर रहे हैं और श्यामू, बीरू और नन्दू कल शाम को उस ओर गये थे। नौ बजे सवेरे वे श्यामू के घर पहुँचे। बीरू और नन्दू को भी बुला भेजा। तीनों को बैठाकर उन्होंने अधिकार के साथ कहा—देखो, सब बातों में तुमलोग यों लड़कपन न दिखाया करो। जहाँ तक अपने हाथ की बात हो वहाँ तक ही पहुँचने की कोशिश करनी चाहिये।

सीरी काका का यह रूप उनलोगोंने कभी नहीं देखा था। सिवा उस कबड्डीवाले दिन की बात छोड़कर उनलोगोंके प्रति उनकी सदा सहानुभूति ही रही थी। आज उनके चेहरे का भाव देखकर वे लोग आश्चर्यचकित हो गये।

बीरू ने सहमते हुए कहा—काका, अज्ञान में हमलोगों से अगर कोई कसूर हो गया हो, तो क्षमा करें।

सीरी महाराज ने कहा—नहीं, देखो, जमालदीपुर में प्लेग फैल गया है—घर-घर चूहे गिर रहे हैं, दो-चार घरों

*

में लोग खाट पर भी गिर गये हैं। तुमलोगोंको वहाँ जाने की क्या जरूरत थी ?

सीरी काका के स्वर में परिवर्त्तन देखकर तीनों को ढाढ़स हुआ। श्यासू ने विनम्र होकर कहा—हमलोग उधर जान-बूझकर नहीं गये थे। यों ही टहलते निकल गये थे। रहमत ने हमलोगोंसे बताया था जरूर; पर उत्सुकता से वहाँ तक चले गये। फिर हमलोग तुरन्त लौट आये।

अच्छा जाने दो। गाँव से बाहर आने-जाने की जरूरत नहीं। तुमलोगोंके दिल में हमदर्दी है और रहनी ही चाहिये। तुमलोगोंकी ओर से हम जमालदीपुरवालों की आज खोज-खबर लेंगे……।

अभी सीरी महाराज की बात भी पूरी नहीं हुई थी कि रघुवीर बाबू भी वहाँ आ पहुँचे। आते ही पूछा—आज चचा-भतीजों की कैसी गोष्ठी जमी है ?

सीरी महाराज ने कहा—जमालदीपुर में प्लेग फैल गया है। सुना, कल ये लोग वहाँ चले गये थे। वही समझा रहा था कि ऐसी बातों में लड़कपन करना ठीक नहीं। समय और स्थान देखकर सेवा-कार्य में हाथ बँटाना चाहिये; पर ऐसी आफत के दिनों में जहाँ-तहाँ होते फिरना ठीक नहीं………।

हाँ, मैंने भी आज सवेरे ही इनलोगोंके जमालदीपुर जाने की बात सुनी। मुझे तो तुमपर भी एक बार गुस्सा आया

कि तुमने ही इन लोगों को खराब कर रख दिया है। पर तुम्हारी अभी की बात सुनकर मैं स्वयं लज्जित हो गया। क्षमा करोगे, भाई।

नहीं, नहीं आप भी कैसी बातें करते हैं! आप मुझे यों कहकर लज्जित न करें।

सप्ताह बीतते न बीतते जमालदीपुर में घोर प्लेग छा गया। सूनसान कब्रगाह पर दिन-रात लोगों की भीड़-सी लगी रहने लगी। कोई घर बाकी न था, जहाँ से एक-दो लाशें न निकली हों। पर लोग देखते कि बाल-मण्डली का सच्चा सिपाही सीरी महाराज एक धुन से सवेरे से शाम तक वहाँ के पीड़ितों की सेवा में लगे रहते। रात में तो सोते अपने घर, पर नींद खुलती उनकी जमालदीपुर जाकर ही। गाँव के लोगों ने और बीरू, श्यामू, नन्दू ने भी उन्हें वहाँ जाने से कई बार मना किया; पर उन तीनों की छाप—बाल-मण्डली के उद्देश्य की अन्तर्भावना—से वे प्रेरित रहे और लोगों ने तब तक जमालदीपुर की ओर रोज सूर्योदय से पहले उन्हें जाते देखा, जब तक वे स्वयं खाट पर न गिर पड़े। जिस दिन वे खाट पर गिरे उसके दूसरे दिन ही सारे गाँव में खबर फैल गयी कि सीरी महाराज को भी प्लेग हो गया। पर उन्हें प्लेग न था, वे रात-दिन के परिश्रम की हरारत से खाट पर पड़ गये थे।

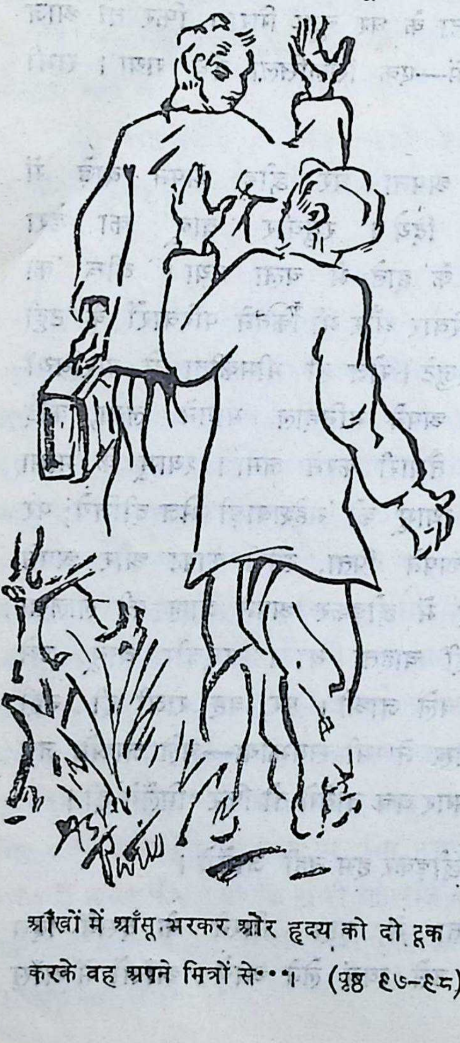
सीरी महाराज के बीमार पड़ने के ठीक तीसरे दिन भीमकीता में भी नब्बो चाचा के घर चूहा गिरा। फिर तो आज उनके, कल दूसरे घर में—एक सिलसिला बँध गया। सभी आतंकित हो गये।

लच्छू बाबा ने अपना घर छोड़ अपने बाड़े में टट्टी के घर बनवा दिये। रघुवीर बाबू का डेरा उठकर बाल-मण्डली के हाते में चला गया। बीरू का परिवार, नन्दू का परिवार और भी कितने परिवारों के टट्टी के घर उसी हाते में जा जुटे। रोज ही भीमकीता से अरथियाँ निकलने लगीं। कोई अपने ननिहाल भागने लगा, कोई फूफा के गाँव चलने की तैयारी करने लगा। श्यामू के मामा की चिट्ठी आयी कि श्यामू को महेशबाड़ी भेज दीजिये; पर श्यामू राज़ी न हुआ। अपने पिता, सीरी काका और अपने प्यारे मित्रों को विपद में छोड़कर अपने प्राण की लालसा लेकर वह भागना नहीं चाहता था। रघुवीर बाबू उसे हजार समझाते—तुम चले जाओ। पर, वह राजी ही नहीं होता। नन्दू और बीरू ने भी समझाया—चले जाओ, जब बाबूजी कहते हैं तो। अगर बच जायेंगे तो फिर मिलेंगे ही।

नहीं तुमलोगों को छोड़कर हम नहीं जायेंगे।

आखिर भीमकीता में चूहा गिरने के दसवें दिन श्यामू के बड़े मामा उसे स्वयं लेने आये। आँखों में आँसू

भरकर और हृदय को दो टूक करके वह अपने मित्रों से ठीक ग्यारह बजे रात में विदा हुआ और एक बजे रात की गाड़ी से अपने स्टेशन से पूरब की ओर जानेवाली गाड़ी में अपने मामा के साथ अपने ननिहाल महेशबाड़ी के लिए रवाना हो गया।



आँखों में आँसू भरकर और हृदय को दो टूक करके वह अपने मित्रों से…। (पृष्ठ ९७-९८)

अंधकार को चीरती रेलगाड़ी भागी जा रही थी। डिब्बों में लोग गाड़ी के हिलोरों में आनंद की नींद ले रहे थे; पर श्यामू की आँखें आँसू से धुँधली हो रही थीं। वह बार-बार अपने

गाँव की ओर देख रहा था। बाबूजी, बीरू, नन्दू, सीरी काका और जग्गू की मूर्तियाँ मालूम होता कि उसे रोक रही हैं और कह रही हैं—हमलोगों को यों छोड़कर जा रहे हो ! सारी रात उसके मस्तिष्क में दुर्भावनाएँ ही आती रहीं—कौन बचेगा, किससे फिर भेंट होगी या न होगी ? मैं स्वार्थी होकर अपने प्राण बचाने भागा जा रहा हूँ।

छह बजे भोर में जब उसके मामा जगे तो देखा वह ज्यों-का-त्यों उदास—गम्भीर बैठा है।

अरे, श्यामू सोया नहीं ? अब तो हमलोगों का स्टेशन पहुँचा ही चाहता है।

यह सुनकर वह जरा सचेत हुआ—हाँ मामा, यों ही देखता जा रहा हूँ इधर के दृश्य।

बस, अब उतरना ही है। यह देखो पार्वतीपुर गाँव है। इसके बाद ही मुरारीपुर स्टेशन पड़ेगा।

ठीक छह बजकर चालीस मिनट पर मुरारीपुर स्टेशन पर गाड़ी जाकर लगी। स्टेशन पर श्यामू के मामा के नौकर बैलगाड़ी लेकर रात की गाड़ी से ही आसरा देख रहे थे। सामान लदा और टप्परवाली बैलगाड़ी स्टेशन से अग्निकोण की ओर रवाना हो गयी।

❋

मुरारीपुर स्टेशन से महेशबाड़ी करीब आठ मील पड़ता था। गाड़ी का रास्ता खेतों की आरी काटकर बना हुआ था—ऊबड़-खाबड़। रात-भर जगा रहने के कारण श्यामू का शरीर बिलकुल ढीला हो रहा था। बैलगाड़ी के झकझोरों और ऊँघाई के झोकों के बीच उसके सामने अपने गाँव के भयानक दृश्य घिरे आते और वह बीच-बीच में बौखला-सा उठता। पर, मामा के बगल में रहने के कारण वह फिर ज्यों-का-त्यों गाड़ी पर पड़ा रह जाता।

महेशबाड़ी गाँव में गाड़ी ने कब प्रवेश किया, यह श्यामू को पता नहीं लगा। वह इस अवस्था से तब जगा जब गाड़ी उसके मामा के बड़े मकान के सामने जाकर लगी और 'श्यामू भैया आ गये······श्यामू भैया आ गये' की आवाज उसके कानों में पड़ी।

जब तक श्यामू गाड़ी से उतरकर दरवाजे पर आया, इसके बीच उसकी उम्र के करीब दस-बारह लड़के उसे देखने को घिर आये। उनलोगों को देखकर उसके सामने बीरू, नन्दू आदि के चित्र खिच गये।

वह उदास हो सोचने लगा—वे लोग कैसे होंगे? मैं यहाँ चला आया···।

धीरे-धीरे और सभी लड़के वहाँ से हट गये, पर भानु वहाँ तब तक चुपचाप बैठा रहा जब तक श्यामू सब

कामों से निपटकर वहाँ न आया। न जानें श्यामू के प्रति, उसे देखते ही, भानु को क्या आकर्षण हो गया कि वह श्यामू के चलने-फिरने, बोलने-चालने आदि के ढंग को गौर से देखता रहा। पर, शायद वह संकोच के मारे श्यामू से कुछ कह पा न रहा था।

इस तरह चुपचाप बैठे देख श्मामू ने ही उसके संकोच को भंग करते हुए कहा—क्यों भाई, कब तक चुपचाप बैठे रहोगे ? तुम्हारे यहाँ मैं आया हूँ, चलो जरा घूम-फिर आयें। इतना कहकर उसे हाथ पकड़कर उठा लिया।

दोनों गाँव के बाहर बड़ी तलैया के किनारे-किनारे बातें करते दूर निकल गये। इसी बीच भानु से श्यामू को इतनी निकटता जँच गयी कि वह अपना सारा किस्सा कह गया—उसके कौन-कौन मित्र हैं, उसके गाँव में बाल-मण्डली है, सीरी काका बड़े सहृदय और साहसी आदमी हैं। वह अपने ननिहाल क्यों कर आया है, उसकी बासन्ती मौसी उसे कितना प्यार करती है, जग्गू के प्रति उसका कैसा बर्ताव है आदि-आदि।

भानु भी ऐसा मित्र पाकर गद्गद हो गया। उसने भी अपना कुछ छिपा नहीं रखा—गाँव के कौन लड़के कैसे हैं, किससे उसकी कैसी पटती है, कैसे वह तलैया में आकर

मछली मारता है और कैसे आजकल दोपहर को तीर-धनुष लेकर आम के बगीचे में अपनी दुपहरिया बिताता है।

दिन ढलने को आया—सूर्य छुप-छुप करने लगा, तो वे लोग लौटे। लौटते समय श्यामू की नजर दाहिनी ओर कुछ दूर पर कुछ छोटे-छोटे मिट्टी के बने घरों पर पड़ी। उसने पूछा—भानु, वह कौन-सी बस्ती है ? बड़े छोटे-छोटे घर दिखाई देते हैं।

वह संथालों की बस्ती है। उस ओर कल चलेंगे। वहाँ के कन्हाई चाचा ने ही तो मुझे तीर-धनुष चलाना सिखाया है।—भानु ने कहा।

भानु की बात से श्यामू की उत्सुकता और जग गयी। उसने अपने गाँव में एक-आध बार सौतार (संथाल) को तीर-धनुष लेकर गिलहरी को मारते देखा था, पर उनके घर-द्वार, उनकी बस्ती कभी नहीं देखी। जिस-तिससे उनलोगोंकी बहादुरी की कहानी सुन चुका था।

अच्छा, तो हमलोग उधर कभी अवश्य चलेंगे। क्यों ?—श्यामू ने उत्सुकता प्रकट करते हुए कहा।

*

महेशबाड़ी पहुँचने के शायद बीसवें दिन श्यामू खूब तड़के उठकर भानु के घर जा पहुँचा। सामने भानु के मामा, जो चार-पाँच महीनों से अपने बहनोई के घर पड़े हुए थे, दीख पड़े। श्यामू ने अपनी दायीं आँख की कीच साफ करते हुए पूछा—मामा, भानु अभी सोया है, क्या ?

अभी श्यामू की बात पूरी भी नहीं हुई थी कि श्यामू ने देखा मामा का चेहरा तमतमा उठा। भाड़ में जाय भानु और चूल्हे में जाओ तुम—कहते-कहते जबर्दस्ती श्यामू के दोनों हाथ पकड़कर उसकी दोनों आँखें छुला दीं और बड़बड़ाते आगे बढ़ गये।

श्यामू तो अवाक् हो गया—ये पागल तो नहीं हैं····?

भानु अपने मामा की सारी करतूत देख रहा था। दौड़ता आया और बोला—अरे भाई, क्या हुआ ? मामा यों ही पागल की तरह करते हैं ! बुरा न मानना।

तो क्या वे···? श्यामू ने पूछा।

श्यामू की बात का आशय समझकर भानु ने बीच ही में कहा—नहीं, नहीं; पागल नहीं हैं। कहते हैं कि बंगाल में एक हाथ से आँख छूना अशुभ समझा जाता है और ऐसा देखनेवाले को दोष लगता है। इसीलिए मामा ऐसा प्रायः रोज किया करते हैं।

तो क्या तुम भी ऐसी बातों में—रिवाजों—में विश्वास रखते हो ? यह सिवा पागलपन के और क्या है ?—श्यामू

ने भानु की मुखाकृति को गौर से देखते हुए कहा।

नहीं भाई, मुझे तो मामा से रोज ही झड़प हो जाती है।—भानु ने कहा।

बातें करते-करते वे दोनों गाँव के बाहर निकल गये। श्यामू की उत्सुकता संथालों की बस्ती देखने को ज्यों की त्यों बनी ही थी। उसने कहा—चलो न भानु, जरा कन्हाई मामा के घर की ओर हमलोग चलें। मैं भी तीर-धनुष चलाने सीख जाऊँ, तो कैसा हो ?

ठीक तो है।—भानु ने कहा।

अभी संथालों की बस्ती से कुछ दूर ही पर वे लोग थे कि एक बूढ़ा संथाल सामने आते दिखाई पड़ा। निकट आते ही उसने आश्चर्य से पूछा—अरे, भानु बाबू, आज इधर कहाँ ? यह कौन है ?

हाँ, रम्भो बाबा, यह श्यामू है, श्यामू ! तुम नहीं पहचानते ? देवेश काका··।—भानु ने कहा।

अरे, यह बहुत छोटा था, जब इसकी मा मरी थी। इसकी मा को तो मैंने गोद में खेलाया था, ह···ह······हँसते-हँसते आगे बढ़ गया।

श्यामू आश्चर्यचकित हो उसे जाते देखता रह गया।

श्यामू, क्या देखते हो ? रम्भो बाबा संथालों की बस्ती के सबसे बूढ़े आदमी हैं। कुछ दिनों से ये पागल-से हो गये हैं, पर किसीसे कुछ बुरी बातें नहीं कहते।

ये रात को सोते भी नहीं और घंटों तलैया के पानी में जाकर खड़े रहते हैं। पूछने पर कहते हैं—बोंगा (भगवान) इसीमें तो रहता है। उसीको ढूँढ़ता हूँ। कभी-कभी बड़ी रात में हमलोगों की बस्ती की ओर जाकर गरजता है—बोंगा आज इधर आया है ! कभी जंगल की ओर जाता है तो दो-तीन दिन वहाँ रह जाता है और पेड़ों पर चढ़कर 'बोंगा आया हो, बोंगा आया हो' चिल्लाता है। रम्भो बाबा की ऐसी हालत तब से हो गयी है, जब इसकी एक नतिनी इसकी गोद में ही पड़ी मर गयी।

उसके लिए ऐसा पागल हो गया बेचारा ?—श्यामू जरा गम्भीर होकर बोला।

अब तक वे लोग कन्हाई माँझी के घर आ पहुँचे थे। श्यामू का परिचय देते हुए भानु ने कहा—चाचा, यह है श्यामू। आपको देखने के लिए बड़ा उत्सुक था। इसे तीर-धनुष चलाना सिखा दोगे ?

जरूर सिखाऊँगा ? अपने भांजे को नहीं सिखाऊँगा, तो और किसे सिखाऊँगा ? हाँ, बाबूजी तुम्हारे अच्छे हैं तो ? वे आते थे तो स्टेशन पर गाड़ी लेकर उन्हें मैं ही लाने जाता था। इधर तो वर्षों से वे यहाँ आये ही नहीं। गाड़ी में बैठकर वे रास्ते-भर मुझसे चुहल—हँसी-मजाक—करते आते। बड़े भले हैं रघुवीर बाबू।

मामा, मैं जरा आपकी बस्ती घूमकर देखना चाहता हूँ।

आपलोगोंके घर-आँगन बड़े लिपे-पुते—साफ-सुथरे हैं।—श्यामू ने उत्सुकता प्रकट करते हुए कहा।

हाँ-हाँ, तुम्हारे ही घर-द्वार हैं—तुम्हारे नाना-मामा के घर। तुम्हारी मा भी बचपन में तुम्हारे नाना के साथ प्रायः इधर आती थी। चलो चलें।—कहते-कहते कन्हाई माँझी आगे हो गया।

जिस घर में जाता उसी घर में श्यामू की मा का नाम बताकर कन्हाई माँझी श्यामू का परिचय देता, और सबोंके मुँह से यह सुनकर कि वह बड़ी भली थी, श्यामू मुग्ध हो जाता और अपनेको भूल-सा जाता।

उन संथालों के सौहार्द्र तथा उनके घर-द्वार की सफाई देखकर तो श्यामू एकदम गद्गद हो रहा था; पर विशेष रूप से उनलोगों की ईमानदारी से तो वह इतना प्रभावित हो उठा कि उसे आश्चर्य होने लगा कि कैसे यह सम्भव हो सकता है! उसने देखा कि किसीके घर में ताला का नाम नहीं है। सूने घर-आँगन में बर्त्तन आदि यों ही पड़े हैं, किसी को आने-जाने की रुकावट नहीं। वह अपने गाँव की हालत सोचने लगा—जहाँ एक छोटी-सी चीज आँख से ओझल होने पर लापता हो जाती है। सभ्य कहलानेवाले लोगों की बस्ती और इस असभ्य नाम से पुकारे जानेवाले लोगों की एक छोटी-सी आबादी की तुलना करते-करते वह बोला—मामा, यहाँ देखता हूँ, लोग

अपना सामान योंही बाहर छोड़े हुए हैं। कोई उठा नहीं ले जाता ?

भानु ने उत्तर दिया—नहीं भाई, ऐसी घटना की तो बात भी यहाँ नहीं सोची जाती।

बस्ती के अन्तिम छोर के बाद पूरब की ओर फैला वीरान खुला मैदान। उसके बाद दिखाई पड़ रहे थे छोटे-बड़े पेड़ के झुरमुट अपनी आबादी फैलाये हुए। पूछने पर कन्हाई माँझी ने बताया—वह एक बड़ा घना जंगल है—बाघ-चीतों से भरा हुआ, जो रात में जब-तब बस्ती की ओर आ जाते और मौका पाकर जानवरों को उठा ले जाते। कभी मुठभेड़ हो जाने पर उन्हें अपनी जान बचाना मुश्किल हो जाता है।

भानु ने गौरव दिखाते हुए कहा—हाँ, पर साल ही तो कन्हाई चाचा ने एक बाघ का शिकार किया था। अभी अँधियाला भी अच्छी तरह न हो पाया था कि वह बस्ती की ओर आ गया—वह शिकार के लिए आया था बेचारा ; पर अपने ही शिकार हो गया।

कन्हाई माँझी की बहादुरी की बात सुनते ही श्यामू के सामने उसके सीरी काका की मूर्ति आकर खड़ी हो गयी। फिर नन्दू, बीरू उसके बाबूजी और सारे गाँव का वह दयनीय दृश्य! उसका मन विचलित हो उठा। वह अपनेको भीतर-ही-भीतर कोसने लगा—मैं कैसा कायर हूँ

कि सबोंको उस विपत्ति में छोड़कर भाग आया। जैसे सभी वहाँ थे, मैं भी रहता।

श्यामू की इस अवस्था-पर किसीका ध्यान नहीं था। कन्हाई माँझी ने कहा—अच्छा चलो, अब तुमलोगोंको पहुँचा आयें। काफी देर हो गयी।

हाँ, मामा, मुझे प्यास लगी है, थोड़ा पानी पीऊँगा।—श्यामू का कंठ सूख-सा रहा था।

भानु ने कहा—चलो घर चलकर पीना। यहाँ पानी कहाँ मिलेगा ? कुएँ तो गाँव के बाहर ही हैं।

क्यों मामा, आपके घर पानी नहीं होगा ?—श्यामू ने आश्चर्यचकित हो पूछा।

हाँ-हाँ, पर तुम मेरे घर पानी पीओगे ?—हँसते हुए कन्हाई माँझी ने पूछा।

क्यों नहीं, प्यास जो लगी है।

जाओ घर जाकर पीना।

भानु ने भी आपत्ति की ; पर श्यामू ने कन्हाई माँझी के घर जाकर पानी पीकर सन्तुष्टी की साँस ली।

चलते समय कन्हाई माँझी ने बताया कि तुम सुबह के समय आये, संध्या समय आते तो तुम्हें संथाली नाच-गाने देखने-सुनने का मौका मिलता। अभी बस्ती के अधिकांश लोग देवरपाड़ा चले गये हैं। देवरपाड़ा गाँव से

रेहूगाँव स्टेशन तक एक सड़क बन रही है, उसीमें वे लोग मजदूरी का काम करते हैं।

अच्छा मामा, फिर किसी रोज।—श्यामू ने नम्रता से कहा।

❁

उसी दिन तीसरे पहर डाकिया ने श्यामू के नाम की चिट्ठी दी। खोलते ही उसने पढ़ना शुरू किया—

भाई,

जब से तुम यहाँ से गये, तुम्हारी कोई खबर न मिली। चिन्ता लगी है। गाँव की हालत तो तुम देखकर ही गये थे; पर अब सब ठीक है। तूफान आया था, चला गया; पर सीरी काका को उठा ले गया—अब वे इस दुनिया में न रहे। मरते समय वे तुम्हें बहुत याद कर रहे थे। वे कह गये हैं—श्यामू से मेरा आशीर्वाद कहना तुमलोग न भूलना और अच्छी राह पर काँटे भी हों तो उसपर चलने से न रुकना।

भाई, हमलोग आश्रयहीन हो गये। आओगे तो सारी बातें होंगी। काकाजी भी चाहते हैं कि तुम अब चले आओ। शायद काकाजी भी पत्र लिखेंगे।

तुम्हारे—

बीरू

नन्दू

पत्र पढ़ते-पढ़ते ही उसकी आँखें आँसू में डूब गयीं। घंटों वह यों ही बैठा रहा।

रात को संथालों की बस्ती की ओर से ढोल और गीत की आती हुई आवाज के बीच सीरी काका की मृत्यु की बातें सोचते-सोचते—रोते-रोते कब वह सो गया, उसे पता नहीं चला।

धूप उठ आने पर श्यामू बिछावन से उठा। पहली बात मामा से उसने कही—मामा, मैं घर जाऊँगा।

अरे, आज तुम्हें क्या हो गया है ?

नहीं, चिट्ठी आयी है। अब वहाँ सब ठीक है; पर सीरी काका मर गये। अब मुझे जाना ही चाहिये।

अच्छा देखो। जाओ, जाकर नाश्ता-पानी करो।

दो-तीन दिन हाँ-ना में कट गये। चौथे दिन श्यामू के पिता का पत्र आया कि भीमकीता में अब सब ठीक है, श्यामू को तुरत भेज दें।

यह खबर सुनकर भानु बड़ा उदास हुआ—भाई श्यामू, अब फिर कब आओगे ?

आने की कोशिश करूँगा, पर तुम भूलना नहीं।—श्यामू ने कहा।

जाते ही पत्र लिखना।—सूखा चेहरा लिये भानु ने कहा।

जरूर, पर देखो, सीरी काका अब न रहे, पर उनकी बात मुझे नहीं भूलती। वह तुम्हें भी कहे जाता हूँ—दूसरों की सेवा करने में कभी न चुकना; पर दुजाने की कोशिश न करना।

भानु एक शिष्य की तरह सुनता रहा, कुछ बोला नहीं। लेकिन, श्यामू की बातों को उसने गाँठ बाँध लिया।

फिर वही बैलगाड़ी। पर वह जा रही थी वायुकोण की ओर मुरारीपुर स्टेशन। वह था सुबह का समय; पर यह चिलचिलाती दुपहरिया। रात को आठ बजे पच्छिम की गाड़ी पकड़नी है। उस बार पूरब जानेवाली गाड़ी पर जबर्दस्ती सवार होना पड़ा था, इस बार पच्छिम जानेवाली गाड़ी पर मन खींचे लिये जा रहा है।

जग्गू! जग्गू!!—रात के तीन बजे वीरान गाँव के बीच होकर जाकर श्यामू ने अपने घर पर आवाज लगायी।

उसके पिता, जो दो-तीन रोज से कुछ अस्वस्थ थे, भी जाग उठे।

कुशल-समाचार के बाद सभी अपनी-अपनी जगह

पर सो गये। श्यामू के तीन-चार घंटे कैसे कटे, पता नहीं।

श्यामू आ गये ?—सवेरे ही बीरू ने आकर जगाया। इसके बाद दोनों के मुँह से कोई बात न निकली। फिर नन्दू आया और कितने ही लड़के और कितनों को श्यामू देखना चाहता था, पर वे न थे—प्रलय के शिकार हो गये थे—असमय काल-कवलित हो गये थे। श्यामू निस्तब्ध था—एकदम मूक विमूढ़ की तरह।

प्लेग के आने के साथ-साथ श्यामू की अनुपस्थिति से सभी लड़के तो निष्क्रिय हो ही गये थे। सीरी काका के मरने से तो वे निस्तेज—बलहीन-से हो गये थे। सबोंको भरोसा था कि श्यामू के आने के बाद से उनमें वही उत्साह—वही बल आ जायगा। पर श्यामू तो उनलोगोंसे भी ज्यादा उत्साहहीन हो गया था। उसका चेहरा पीला पड़ गया था। मालूम होता था महीनों पहले से बीमार हो।

इधर यह हालत थी, उधर श्यामू के पिता का स्वास्थ्य गिरता जा रहा था—शरीर क्षीण होता जा रहा था, जैसे क्षय रोग लग गया हो।

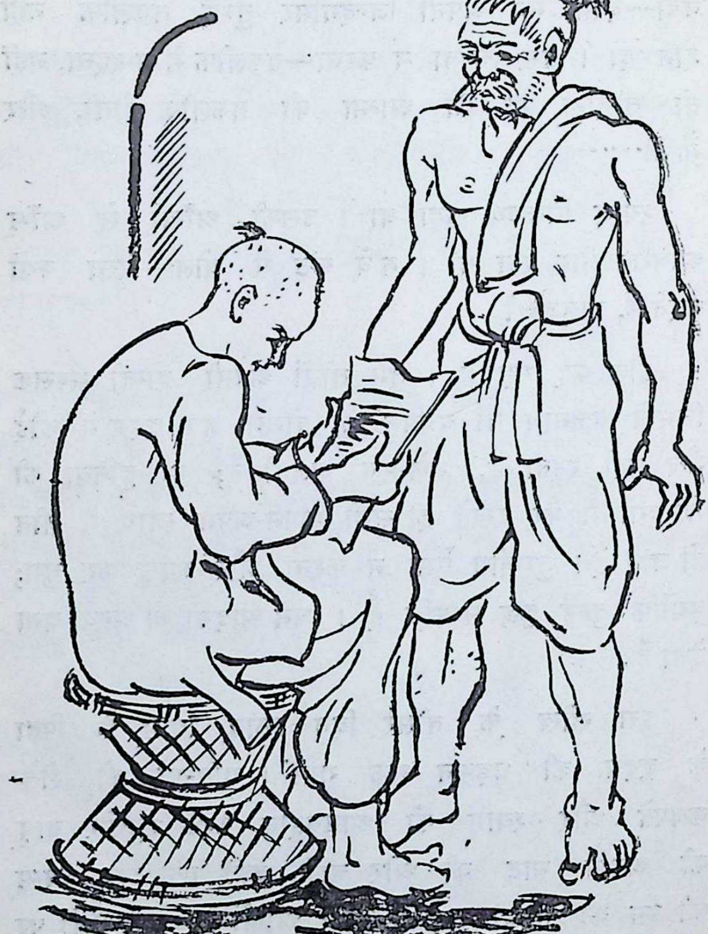
पिता पुत्र की हालत देखकर चिन्ता से गला जा रहा था और पुत्र पिता की अवस्था देखकर घंटों अकेले बैठकर सोचता—अगर पिताजी मर गये, तो मेरी क्या हालत होगी………!

खाट पर पड़े-पड़े एक दिन रघुवीर बाबू ने श्यामू से कहा—देखो, मैंने अपनी जिन्दगीभर तुम्हें तकलीफ नहीं होने दी। तुम चिन्ता न करना—तकलीफ में न रहना, नहीं तो तुम्हारी मा की आत्मा को तकलीफ होगी, और मैं भी……।

श्यामू निस्तब्ध खड़ा था। उसकी आँखों से आँसू अविरल गिर रहा था। रुँधे कंठ से बोला—ऐसा क्यों कहते हैं, बाबूजी ?

ठीक कह रहा हूँ। तुम तीनों अपनी दोस्ती भरसक निभाये चलना। यों बचपन की दोस्ती, जब हृदय में कोई मैल नहीं रहता है, भले-भले चलती है; पर दुनिया की जिन्दगी में पैर रखते ही सभी अपने-अपने स्वार्थ में लीन हो जाते हैं। तुमलोग ऐसा न करना और खास कर तुम; क्योंकि तुम्हें कुछ सम्पत्ति है। धन आदमी को अन्धा बना देता है।

इस सीख के तीसरे दिन हठात् श्यामू के पिता के हृदय की धड़कन रुक गयी। गाँव-भर को रोते-कलपते और श्यामू को आश्रयहीन करके रघुवीर बाबू की अरथी घाट की ओर चली, जहाँ एक दिन श्यामू की मा की अरथी खुद वे रोती आँखों से अपने कंधों पर ढोकर ले गये थे।



छोटे बाबू, मालिक का हुक्म था कि······(पृष्ठ ११५)

ठीक श्यामू के पिता के श्राद्ध के दिन महेशबाड़ी के एक पत्र ने अशुभ समाचार दिया—भानु ने जिद में आकर अपनी जान दे दी। हजारों मना करने पर भी भानु देवरपाड़ा और गेहुगाँववाली सड़क पर काम करनेवाले मजदूरों के बीच फैले हैजा के रोगियों की सेवा करता रहा और एक दिन अपने ही हैजा का शिकार हो गया। मरते समय श्यामू का नाम लेकर बड़ा खुश था।

श्राद्ध के तीसरे दिन जग्गू ने रघुवीर बाबू का लिखा एक पत्र तथा एक वसीयतनामा श्यामू के हाथ में थमाते हुए कहा—छोटे बाबू, मालिक का हुक्म था कि उनके श्राद्ध के ठीक तीसरे दिन आपके हाथ में यह चिट्ठी और कागज दूँ। उसी आज्ञा का पालन कर रहा हूँ।

यह सुनकर श्यामू एकटक जग्गू को देखता रहा और पत्र—

बाबू मेरे,

धन लोगों को अन्धा बना देता है—अपने-पराये सबोंको भुला देता है। इतने दिनों तक मैं धन का मालिक था। अब तुम होओगे। मुझे भय है, इसीलिए यह सम्पत्ति तुम तीनों—तुम्हारे, बीरू और नन्दू के—बीच बाँट दे रहा हूँ। बाल-मण्डलीवाले बगीचे और मकान पर किसीका अधिकार

नहीं रहेगा, वह जनसाधारण की चीज रहेगा। तुम तीनों उसके केवल संरक्षकमात्र रहोगे। सीरी की स्त्री की जिन्दगी-भर के भरण-पोषण की व्यवस्था भी मैंने उसी वसीयतनामे में कर दी है। जग्गू के सम्बन्ध की बात भी वसीयतनामे में तुम्हें मिलेगी।

बुरा न मानना कि मैंने सम्पत्ति को तोड़-मरोड़ दिया। मेरे विचार से यही ठीक है।

तुम्हारे—

बाबूजी



[illegible]